UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 12 | युगाब्द - 5126 | विक्रम संवत् - 2081 | अगस्त – 2024

मूल्य: 12

स्वतन्त्रता दिवस एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएँ

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-31654408
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
फोन नं. : 9415212142
ईमेल :umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

संगत का प्रभाव

एक राजा शिकार खेलने जंगल में जा पहुँचा। शिकार की तलास में जंगल के अन्दर चला जा रहा था, तभी कुछ दूर पर डाकुओं के छिपने की जगह दिखाई दी। वहाँ पेड़ पर बैठा एक तोता जोर–जोर से आवाज करने लगा। दौड़े–दौड़े एक राजा आ रहा है जिसके पास बहुत सा धन है तोता की यह आवाज सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी क्षण देखा डाकुओं का समूह राजा की ओर तेजी से आ रहा है। राजा अपने साथियों सहित भागने लगा। भागते–भागते कोषो दूर निकल गये एक पेड़ दिखायी दिया, उसके नीचे बैठ कर आराम करने लगे। तभी देखा एक तोता कहता आइये बैठिए, और ऋषि के आश्रम में आराम करिए। राजा विश्वास करके अन्दर चले गये। देखा एक साधू पूजा में रत हैं राजा ने बैठकर ऋषि से सारी बात बतलाई जो जैसी संगत में रहता है, उसका प्रभाव वैसा उसके ऊपर पड़ता है। जो जैसी संगत रहेगा वह वैसा बन जायेगा।

सत्संग बड़ी कठिनाई से मिलता है।
अच्छे लोगों से सत्संग करें।

आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

अपनी बात

सद्गुरु स्वयं की सुख–सुविधाओं की परवाह न कर अपने शिष्य की समाजोचित कल्याणकारी शिक्षा दीक्षा में सहायक सत्कर्मों को कठोरतापूर्वक स्वयं के जीवन में धारण करता है। इसी कठोर तप से गुरु को वह आत्मबल प्राप्त होता है जिसके प्रभाव से वह शिष्य की अधकचरी प्रवृत्तियों में शोधन एवं परिवर्धन कर उसे देवत्व की ओर जाने वाली राह पकड़ा देने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार स्वयं जलकर शिष्य की राह को प्रकाशमान करते हुए अपने स्नेह की छाया में उसे स्वयं से भी अधिक ऊंचा उठा देता है। साथ ही निराशा के अंध तमस् से निकालकर उसमें आशा की ज्योति जगा देता है। भटके को राह दिखाना स्वार्थी को परमार्थी बनाकर इस मरणधर्मी संसार में अमरत्व की पहचान करा देता है। माता पिता के द्वारा प्रारम्भिक लालन पालन और शिक्षण के बाद गुरु ही शिष्य को जीवन के रहस्यों से परिचित करा कर जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कराने में समर्थ बना देता है। इसी क्रम में स्वतंत्रता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हम केवल एक व्यक्ति ही नहीं हैं, बल्कि हम एक ऐसे महान जन–समुदाय का हिस्सा हैं जो अपनी तरह का सबसे बड़ा और जीवन्त समुदाय है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों का समुदाय है।

जब हम स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाते हैं तो वास्तव में हम एक महान लोकतन्त्र के नागरिक होने का उत्सव भी मनाते हैं। हममें से हर एक की अलग–अलग पहचान है। जाति, पंथ, भाषा और क्षेत्र के अलावा, हमारी अपने परिवार और कार्य–क्षेत्र से जुड़ी पहचान भी होती है। लेकिन हमारी एक पहचान ऐसी है जो इन सबसे ऊपर है, और हमारी वह पहचान है, भारत का नागरिक होना। हम सभी जाति, वर्ग, भाषा आदि अनेक भेदों के होते हुए भी समान रूप से, इस महान देश के नागरिक हैं। यही बात तमिल भाषा के एक कवि ने तमिल भाषा में इस प्रकार कहा है :–'एत्तनै मोडिगल इन्नाट्टिल एन्नीनुम नाँगल इंदियरे' इस तरह हम सब भारतीय हैं, सबको समान अवसर और अधिकार उपलब्ध हैं तथा हमारे कर्तव्य भी समान हैं। इसी भाव बुद्धि के साथ स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत वीर विनायक दामोदर सावरकर महान क्रांतिकारी और राष्ट्रभक्तों की शृंखला में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रखर राजनीतिज्ञ, लेखक, कवि, इतिहासकार, समाज सुधारक, राष्ट्र चिंतक, महान विचारक, स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत, अखण्ड भारत के प्रबल पक्षधर, महान क्रांतिकारी, प्रख्यात राष्ट्रभक्त, मां भारती के अमर सपूत जिन्होंने मां भारती की रक्षा सुरक्षा हेतु अमरता ग्रहण की, वे आज हमारे लिए एक राष्ट्रीय धरोहर के रूप में हैं। ऐसे मां भारती के अमर सपूतों के श्री चरणों में हम कोटि–कोटि श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं, वंदन अभिनंदन करते हुए यह अंक आपको समर्पित है।

परीक्षा एवं मूल्यांकन

परीक्षा शिक्षण–प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह शिक्षण का साधन है। किन्तु दुर्भाग्यवश आज परीक्षा शिक्षण का उद्देश्य बन गयी है। विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु अध्ययन करते हैं। शिक्षक भी छात्रों को परीक्षा उत्तीर्ण कराने के उद्देश्य से पढ़ाते हैं। अर्थात् सम्पूर्ण शिक्षण–प्रक्रिया परीक्षोन्मुख बनकर रह गयी है। सही शिक्षण के लिये परीक्षा को शिक्षण का साधन मानकर चलना आवश्यक है। परीक्षा के माध्यम से छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान के स्तर का मापन होता है जिससे छात्र को अपनी स्थिति का ज्ञान हो जाता है और तद्नुसार वह अपने अध्ययन एवं अभ्यास की गति और पद्धति में सुधार ला सकता है। शिक्षक को भी परीक्षा के माध्यम से अपने छात्रों की स्थिति ज्ञात हो जाती है और वह अपनी शिक्षण पद्धति में सुधार ला सकता है तथा आवश्यकतानुसार छात्रों की व्यक्तिशः सहायता भी कर सकता है। अतः परीक्षा का शिक्षण–प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मूल्यांकन का क्षेत्र

मूल्यांकन–प्रक्रिया का क्षेत्र व्यापक है। परीक्षण मूल्यांकन–प्रक्रिया का एक भाग है। वर्तमान शिक्षाशास्त्रियों का शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाने पर अधिक बल है। यह सभी का अनुभव है कि कागज–पेन्सिल के माध्यम से जो परीक्षण किये जाते हैं, उनके द्वारा छात्रों की शिक्षा–सम्बन्धी उन्नति और व्यवहार के बहुत सीमित भाग का मापन होता है। इसलिये बाह्य परीक्षण को महत्त्व दिया गया है। किन्तु साथ ही छात्र के सर्वांगीण लेखा, व्यक्तिगत अध्ययन, साक्षात्कार, कक्षा–विवरण आदि के माध्यम से उसके व्यबहार एवं प्रगति का मूल्यांकन करने की पद्धति प्रचलित हुई, जो शैक्षिक प्रक्रिया एवं उसके उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुई है।

स्व–मूल्यांकन –

शिक्षक शिक्षण–प्रक्रिया के माध्यम से निर्धारित पाठ्यक्रम को अपनाकर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करता है। उसे निरन्तर स्व–मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि पाठ्यक्रम का जो संयोजन किया गया है वह उचित है या नहीं और उसकी प्रकृति के अनुसार छात्रों की अपेक्षित प्रगति हो रही है या नहीं। यदि नहीं हो रही है तो पाठ्यक्रम के रूप में उसके संयोजन और प्रयोग में क्या परिवर्तन अपेक्षित और बांछनीय है। साथ ही शिक्षक को अपने शिक्षण की पद्धति का भी मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि वह उचित है या नहीं, तथा आवश्यकतानुसार उसमें भी सुधार या परिवर्तन करना चाहिए। शिक्षक का यह भी कर्तव्य है कि वह इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न करे और ऐसी व्यवस्था करे कि स्वयं छात्र भी अपनी प्रगति और बौद्धिक विकास की गति का स्वयं मूल्यांकन कर सकें। शिक्षा के क्षेत्र में इस स्वमूल्यांकन की व्यवस्था को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जा रहा है। जीवन की प्रत्येक क्रिया का, विशेषतः ज्ञानार्जन–क्रम का मूल्यांकन करते रहना चाहिए, जिससे एक ओर यह ज्ञात होता चले कि हमारी कितनी प्रगति हो रही है और दूसरी ओर प्रगति में बाधक सिद्ध होने वाले तत्वों का निराकरण करके तदनुसार पाठ्यक्रम में अथवा शिक्षण योजना में उचित परिवर्तन किया जा सके।

मूल्यांकन सर्वांगीण एवं सतत प्रक्रिया –

1. सर्वांगीण मूल्यांकन

मूल्यांकन की प्रक्रिया ऐसी अपनायी जाय जिससे शिक्षण के सभी उद्देश्यों को प्राप्ति की दिशा में हुई प्रगति का ज्ञान हो सके।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण

अर्थात् शारीरिक, व्यावसायिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास माना गया है। अतः मूल्यांकन की प्रक्रिया ऐसी अपनायी जाय जिससे व्यक्तित्व के इन सभी पक्षों के विकास का मूल्यांकन होता चले। शिक्षक प्रायः मानसिक विकास के मूल्यांकन पर अपना प्रयास सीमित कर देते हैं तथा अन्य पक्षों की उपेक्षा कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप बालक का सर्वांगीण विकास उपेक्षित रहता है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षक की सर्वांगीण मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

2. सतत मूल्यांकन

मूल्यांकन शिक्षण–प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, अतः प्रत्येक क्षेत्र में छात्रों की प्रगति का सतत मूल्यांकन होते रहना चाहिए। छात्रों को ज्ञान–प्राप्ति के बाद यथाशीघ्र ज्ञान का परिणाम मिलना चाहिए। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि उन्होंने क्या सीखा है और कितना सीखा है तथा कितनी अच्छी तरह सीखा है। अध्यापक को भी अपनी शिक्षण–प्रक्रिया का मूल्यांकन प्रत्येक शिक्षण–इकाई समाप्त होने के पश्चात् करना चाहिए, तभी वह अपमी शिक्षण–प्रक्रिया के सम्बन्ध में अपेक्षित विचार कर सकेगा। वार्षिक अथवा अर्धवार्षिक या मासिक मूल्यांकन करने से मूल्यांकन का सही उपयोग नहीं हो सकता। अतः मूल्यांकन शिक्षण के साथ–साथ सत्तत प्रक्रिया के रूप में चलते रहना चाहिए। अनेक शिक्षाविदों ने शिक्षण के पदों में मूल्यांकन को भी एक पद के रूप में माना है।

मूल्यांकन की पद्धति

सामान्यतः मूल्यांकन की निम्नलिखित पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

1. लिखित परीक्षा के द्वारा मूल्यांकन करना। इसके लिये निबन्धात्मक, लघु निबन्धात्मक तथा विविध प्रकार के वस्तुनिष्ठ परीक्षण प्रचलित हैं।

2. छात्र द्वारा किये गये निर्माण कार्य या उत्पादक कार्य का विश्लेषण करके मूल्यांकन करना ।

3. कक्ष में प्रश्नावली के द्वारा अथवा विचार–मंथन करके मूल्यांकन करना।

4. छात्र के व्यवहार का निरीक्षण करके मूल्यांकन करना। व्यवहार का निरीक्षण अनौपचारिक ढंग से भी किया जाता है और किसी विशिष्ट व्यवहार के लिये विशेष परिस्थिति का योजनाबद्ध निर्माण करके व्यवस्थित निरीक्षण भी किया जाता है।

5. पारस्परिक विचार–विमर्श के द्वारा एवं व्यक्तितः अथवा समूह में साक्षात्कार के द्वारा मूल्यांकन करना।

मूल्यांकन–पद्धति की विशेषताएँ

मूल्यांकन की पद्धति को उपयोगी बनाने के लिये उसमें निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है–

1. मूल्यांकन निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के विश्वसनीय और ठोस प्रमाण देने वाला होना चाहिए।

2. उसे क्रमशः कई उद्देश्यों और फिर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अपनी सीमा में लेने वाला होना चाहिए।

3. यह बात महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थी मूल्यांकन के प्रति गलत दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा उसे अपनी उपलब्धियों में सुधार का साधन समझकर सही रूप में ग्रहण करे। पाठ्यक्रम के सभी विषयों में एक ही समय उत्तीर्ण होने पर बल देने और अनुत्तीर्ण होने के भय के कारण बहुत से विद्यार्थी असन्तुलित हो जाते हैं और उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। अतः मूल्यांकन में लचक होनी चाहिए। मूल्यांकन की विधि ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति अपनाये और अपने ज्ञान का उपयोग नवीन परिस्थितियों एवं समस्याओं समाधान ढूँढ़ने में कर सके। छात्र तब तक आलोचनात्मक चिन्तन, सर्जनात्मकता और मूल्यात्मक–निर्णय जैसी ज्ञान की उच्च सीमाओं तक पहुँचने के लिये प्रयास नहीं करेंगे, जब तक कि ज्ञान को उपयुक्त अनुभवों से विकसित करने और उसके उचित मूल्यांकन करने की व्यवस्था नहीं की जायेगी। जहाँ विद्यालयों में केवल शुष्क शैक्षिक अनुभव दिये

जाते हैं या मूल्यांकन की विधि रटने की प्रवृत्ति प्रोत्साहित करती है, वहाँ समस्त शैक्षिक उद्देश्य निरर्थक हो जाते हैं।

4. प्राथमिक स्तर पर बालक छोटे और कोमल होते हैं। इस स्तर पर पर मूल्यांकन की कोई लचकहीन प्रणाली लागू नहीं की जा सकती। अतः मूल शिक्षण–प्रक्रिया में ही सन्निहित होना चाहिए। प्रत्येक छात्र का लगातार का लेखा रखने की प्रणाली का विकास किया जाना चाहिए। इसका निरीक्षण और मौखिक परीक्षाएँ होनी चाहिए। प्रोन्नति का आधार वर्ष के में ली जाने वाली परीक्षा नहीं होनी चाहिए। सम्पूर्ण सत्र में प्रगति के आधार पर ही बालक को अगली कक्षा में बढ़ाना चाहिए। कुछ शिक्षाविदों का मत है कि प्राथमिक स्तर पर सामान्यतः सभी छात्रों को अगली कक्षा देना चाहिए। फिर भी उन छात्रों पर विशेष ध्यान देने की व्यवस्था करनी चाहिए जो सन्तोषजनक प्रगति नहीं करते।

5. प्रत्येक क्षेत्र में विद्याथियों की प्रगति का सतत मूल्यांकन एक कार्य–पद्धति पर आधारित होना चाहिए। माध्यमिक एवं आगे के स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों में प्रगति के मूल्यांकन के लिये लिखित परीक्षाएँ भी होनी चाहिए। किन्तु परीक्षण की विधि केवल निबन्धात्मक परीक्षाओं की ही नहीं होनी चाहिए। उसके लिए अलग–अलग विभिन्न पद्धतियाँ अपनानी चाहिए। प्रायोगिक परीक्षाएँ होनी चाहिए। निरीक्षण, जाँच सूचियाँ, मौखिक परीक्षाएँ, विद्यार्थियों द्वारा वस्तुओं का मूल्यांकन भी इस परीक्षण के अतिरिक्त साधनों और विधियों के रूप में प्रयोग करने चाहिए। यदि आवश्यक हो तो वार्षिक परीक्षा भी ली जा सकती है, किन्तु वर्ष में किये गये अन्य मूल्यांकनों की तुलना में इस पर अधिक बल नहीं देना चाहिए। वास्तव में किसी भी परीक्षा में कोई उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण नहीं होना चाहिए। उनके स्तर को सूचित करने वाले अक्षरों (क, ख, ग, घ, ङ) का प्रयोग किया जा सकता है। इस मूल्यांकन का आगामी शिक्षा में उपभोग महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को उनकी परीक्षण की गयी उत्तर–पुस्तिकाएं लौटाकर उनकी अशुद्धियों पर बातचीत करनी चाहिए तथा उन्हें और अच्छे ढंग से कार्य कर सकने के लिये मार्गदर्शन देना चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी अपने किसी मूल्यांकन में अपना स्तर सुधारना चाहता है तो उसे उस विषय में पुनः परीक्षा देने का अवसर दिया जाना चाहिए।

6. प्रत्येक विषय में विद्यालय द्वारा किये गये संचयित मूल्यांकन का अभिलेख (रिकार्ड) बनाया जाना चाहिए और इस प्रकार के मूल्यांकन में छात्र की समस्त गतिविधियों की प्रगति का लेखा होना चाहिए तथा विद्यालय छोड़ने के समय यह लेखा विद्यार्थी को प्रमाण–पत्र के रूप में देना चाहिए।

निष्कर्ष :

मूल्यांकन का प्रयोग पाठ्यक्रम के विकास के सम्बन्ध में मुख्यतः उपयोगी होता है। किसी एक अवस्था के बालकों को लेकर उनका मूल्यांकन करने पर ही यह निश्चित करना सम्भव हो पाता है कि अमुक अवस्था के बालकों को कौन से विषय, किस सीमा तक, किस पद्धति से सिखाये जायें। अतः मूल्यांकन का शिक्षण–प्रक्रिया में सतत प्रयोग नितान्त आवश्यक है। इसका निरन्तर प्रयोग करते रहने से पाठ्यक्रम में नबीन विषय जोड़ने, पुराने विषय कम करने, घटाने या बढ़ाने का नियोजन भी किया जा सकता है। अतः शिक्षक को निर्धारित पाठ्यक्रम का दास न बनकर उसे इस प्रकार नियोजित करते रहना चाहिए कि व्यापक रूप से छात्रों का हित और उनका सर्वांगीण विकास हो, जिसका अनुभव और मूल्यांकन स्वयं छात्र भी कर सकें और अभिभावक भी।

भारत में प्रथम महिला

श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल
राष्ट्रपति

श्रीमती इन्दिरा गांधी
प्रधानमंत्री

मीरा कुमार
लोकसभा अध्यक्ष

राधाबाई सुबारायन
सांसद

सरोजनी नायडू (उत्तर प्रदेश)
राज्यपाल

अन्ना राजम मल्होत्रा
आई.ए.एस.

किरण बेदी
आई.पी.एस.

शुचिता कृपलानी
मुख्यमंत्री

राजकुमारी अमृत कौर
केन्द्रीय मंत्री

ए. फातिमा बीबी
न्यायाधीश

लीला सेठ
मुख्य न्यायाधीश, हिमांचल प्रदेश

नीरजा भनोट
अशोक चक्र पाने वाली

विजय लक्ष्मी पंडित
संयुक्त राष्ट्र की राजदूत

बछेन्द्री पाल
एवरेस्ट विजेता

रीता फारिया
मिस वर्ल्ड

संस्कृति बोध परियोजना

राजकुमार सिंह
क्षेत्र प्रमुख
संस्कृति बोध परियोजना पूर्वी उ०प्र०

विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने अपने कार्य को समाज के सभी लोगों तक पहुँचाने के लिए चार आयामों की रचना की है। 1–क्रियाशोध 2–विद्वत्परिषद 3–पूर्व छात्र 4–संस्कृति बोध परियोजना।

विश्व में प्रत्येक देश अपनी संस्कृति, परम्पराओं, जीवन मूल्यों, ज्ञान विज्ञान एवं महापुरूषों के अनुभवों को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में आने वाली पीढ़ी को शिक्षा के माध्यम से सौंपने का प्रयास करता है। भारत की महान आध्यात्मिक संस्कृति, श्रेष्ठ परम्परायें, जीवन मूल्य, महापुरूषों के आदर्श जीवन चरित्र और ज्ञान विज्ञान इस देश की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की अमूल्य निधि है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद अपनी इस अप्रतिम राष्ट्रीय निधि को भावी पोढ़ी को सौंपना तो दूर रहा, इससे परिचित कराने का कार्य भी ठीक प्रकार से नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय स्वाभिमान शून्यता और विदेशी संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति समाज में बढ़ती जा रही है।

हमारी दृढ़ मान्यता है कि यदि हम अपने देश के छात्र–छात्राओं को आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के साथ अपनी महान संस्कृति गौरवपूर्ण इतिहास, जीवनमूल्य एवं श्रेष्ठ परम्पराओं, महापुरूषों के आदर्श जीवन से परिचय कराये तो आज के अराजकता और निराशापूर्ण वातावरण में भी आशा और उत्साह की किरण उत्पन्न होकर विद्यार्थी जगत एवं समाज में अपेक्षित परिवर्तन दिखाई देगा।

इस महत्वपूर्ण कार्य को विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से करने का संकल्प लिया है इसी कम में विद्याभारती के विद्यालयों में 4 से 12 तक 4 वर्गों शिशु, बाल, किशोर, तरूण वर्ग तथा आचार्य बन्धु भगिनी के लिये निबन्ध प्रतियोगिता आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर किया जाता है। आचार्य बन्धुओं को प्रथम पाँच स्थानों तक तथा छः सान्त्वना पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जाता है। सभी 4 वर्गों के स्थान प्राप्त प्रथम, द्वितीय, तृतीय को समितिशः पुरस्कृत किया जाता है। यह प्रतियागिता सभी विद्यालयों में 5 व 14 सितम्बर को आयोजित की जाती है। निबन्धों के विषय संस्थान द्वारा निर्धारित किये जाते हैं।

संस्कृति महोत्सव : सभी विद्यालयों से प्रारम्भ होकर संकुल/जिला/प्रान्त/क्षेत्र तक कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद सभी 11 क्षेत्रों का संस्कृति महोत्सव अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होता है। प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त क्षेत्रों को पुरस्कृत किया जाता है।

महोत्सव के कार्यकम : संस्कृति ज्ञान प्रश्नमंचः संस्कृति संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यकम के आधार पर शिशु, बाल, किशोर, तरूण वर्ग में प्रश्नमंच का कार्यकम आयोजित होता है। प्रत्येक टीम में 3–3 भैया बहिन होते है। सभी वर्गों के प्रश्नमंच विद्यालय स्तर से प्रारम्भ होकर अखिल भारतीय स्तर तक होते है।

बोध कथा : भैया/बहिनों में प्रेरणा जगाने हेतु पौराणिक, ऐतिहासिक एवं लोक कथाओं पर आधारित बोध कथाओं का प्रस्तुतीकरण भैया बहिनों द्वारा निर्धारित समय में पूर्ण किया जाता है यह कार्यकम केवल शिशु (4.5) तथा बालवर्ग (6,7,8) के लिये होता है।

आशुभाषण : किशोर व तरूण वर्ग के भैया बहिन समसामयिक विषयों की तैयारी कर अपनी अभिव्यक्ति

कर सके इस लिए आशुभाषण कार्यकम का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिता स्थल पर ही भैया/बहिनों को पर्ची के माध्यम से विषय उपलब्ध कराये जाते है। प्रत्येक प्रतिभागी को तीन मिनट का समय सोच विचार के लिये दिया जाता है।

आचार्य पत्रवाचन : इस कार्यक्रम में विद्यालय स्तर से क्षेत्र स्तर तक चयनित होकर आये आचार्य बन्धु/भगिनी द्वारा संस्थान द्वारा दिये गये विषय पर दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करते हुये अपने पत्र का वाचन करते हैं।

मूर्तिकला : भैया/बहिनों के रचनात्मक कौशल विकसित करने के लिए मिट्टी से मूर्ति बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। मिट्टी गूँथने से लेकर मूर्ति बनाने तक 5 घण्टे का समय प्रतियोगिता स्थल पर ही दिया जाता है। मूर्ति को रंगों द्वारा रंगने एवं सजाने की अनुमति नहीं होती है। यह प्रतियोगिता केवल बाल व किशोर वर्ग के लिए ही होती है।

लोक नृत्य प्रदर्शन : विभिन्न अंचलों की लोक कलाओं पर आधारित नृत्यों के सम्बर्द्धन हेतु यह विधा प्रयोग की गई है। वाद्य बजाने वालों सहित कुल 15 प्रतिभागी भाग ले सकते हैं। प्रत्येक दल लोकनृत्य सम्बंधी सामग्री अपने स्थान से लाता है। प्रतियोगिता स्थल पर मंच, ध्वनि एवं प्रकाश की व्यवस्था की जाती है।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा : विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित संस्कृति बोध माला का प्रकाशन 10 भागों में किया गया हे। पुस्तकों को 8 भागों में विभाजित कियागया है। 1–हमारी भारत माता 2–हमारा भारत राष्ट्र 3–भारतीय संस्कृति 4–भारतीय परिवार व्यवस्था 5–भारतीय ज्ञान परम्परा 6–हमारी वैज्ञानिक परम्परा 7–हमारा गौरवशाली अतीत 8–हमारी भारतीय संस्कृति का विश्व संचार। संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन 1980 में 30,000 भैया बहिनों से प्रारम्भ हुई थी। कोरोना पूर्व 22,31,998 तक पहुँची थी। कोरोना संकमण के कारण व्यवधान आया। इस सत्र में हमने 19–20 के ऑकड़े को पार कर लिया है। यह परीक्षा कक्षा तृतीय से लेकर द्वादशी तक के भैया बहिनों के लिये आयोजित की जाती है। इस परीक्षा में विद्याभारती के अतिरिकत अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी सहभागी हो सकते हैं।

इस परीक्षा को लकर विभिन्न सामाजिक संगठनों एंव संस्थानों ने रूचि दिखाई है इस लिये महाविद्यालयीन छात्रों, अभिभावकों एवं आचार्य बन्धु/भगिनी के लिए प्रवेशिका, मध्यमा, उत्तमा और प्रज्ञा परीक्षा का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। कक्षा तृतीय से सप्तमी तक भैया बहिन उत्तर पुस्तिकाओं पर ही उत्तर देते हैं। कक्षा 8 से लेकर प्रज्ञा परीक्षा तक परीक्षा ओ०एम०आर० शीट पर होती है। 50: या अधिक अंक प्राप्त करने पर उत्तीर्ण इससे कम अंक पर प्रतिभागिता प्रमाणपत्र संस्थान द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। परीक्षा का कोई शुल्क नहीं छात्रों को पुस्तकों का मूल्य 50 रू0 तथा आचार्यों, अभिभावकों की पुस्तकों का मूल्य 60 रू0, प्रज्ञा परीक्षा की पुस्तकों का मूल्य 100 रू0 है।

संस्कृति प्रवाह : विद्यालयों द्वारा चलाये जा रहे संस्कार केन्द्र के छात्रों के लिए संस्कृति प्रवाह पुस्तक की रचना की गई है। पुस्तक का मूल्य 10रू0 है। परीक्षा हेतु प्रश्नपत्र स्थानीय आधार पर निर्मित होते हैं। संस्थान प्रमाणपत्र उपलब्ध कराता है।

संस्कृति बोध अभियान : भारतीय संस्कृति के प्रति जनसामान्य में व्यापक रूप से विस्तार, प्रचार–प्रसार हेतु सम्पूर्ण देश में 1 जुलाई से 15 सितम्बर तक चलाया जायेगा। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 16 अगस्त से 31 अगस्त तक अभियान चलाया जायेगा। अभियान के विधिवत् संचालन हेतु समिति स्तर से लेकर विद्यालय स्तर तक टोलियों का गठन किया गया है। इस अभियान में प्रत्येक विद्यालय अपने आचार्य, पूर्वछात्र,

प्रबन्धसमिति, के पदाधिकारी मातृभारती की माताओं, अभिभावकों, सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं का साथ लेकर सभी पोषित ग्रामों वार्डों, नगरों महानगरों के नागरिकों तक सम्पर्क कर परीक्षा में सम्मिलित कराने की योजना है। आचार्यों अभिभावकों की परीक्षायें 14 दिसम्बर को होंगी। भैया बहिनों एवं अन्य विद्यालयों के छात्र छात्राओं की परीक्षायें 14 दिसम्बर के बाद क्षेत्र समितियों द्वारा निर्धारित तिथियों पर होंगी।

जय भारत – जय संस्कृति

प्रेरक प्रसंग

एक सेठ के पास एक ग्राहक सामान लेने के लिए आया। उसने जितने का सामान लिया उसमें दस रुपये कम पड़ गये। तो सेठ ने कहा "कुछ सामान कम कर देता हूँ। हम उधार नहीं देते।" ग्राहक को सेठ जी की बात बहुत बुरी लगी और बोला, "मेरें घर में तीन दिन से खाना नहीं बना, मेरा पूरा परिवार भूखा है और आपको अभी भी रुपयों की पड़ी है।" सेठ ने कहा "पांच मिनट रुको।'फिर सेठानी से बोलकर घर से भोजन की शानदार थाली लगवाकर ले आये और ग्राहक से बोले, "पहले भोजन करो तथा जाते समय कुछ भोजन बच्चों के लिये भी लेते जाना।" उस

बाद जब सेठ के बच्चों ने पूछा "पिताजी, ये कैसा व्यवहार है? दस रुपये कम पड़ने पर तो आपको उसका सामान कम कर दिया और बाद में भरपेट भोजन तो कराया ही साथ में और भोजन भी बांध दिया। आखिर क्यों ?

सेठ भी खानदानी था बोला "बच्चों, हमेशा यह बात याद रखना, व्यापार करते समय दया मत करो और सेवा करते समय व्यापार मत करो।" यह घटना हमें शिक्षा देती है कि कर्तव्य में भावना का स्थान शून्य है और भावना में कर्तव्य परे हो जाता है।

1857 का स्वतंत्रता समर संघर्ष, समर्पण, शहादत व आजादी

कमल कुमार (संयोजक)
भा. शि. प. उ. प्र. पश्चिम

भारत वर्ष को गुलामी की वेडियों से मुक्त कराने के लिए स्वदेशी भाषा के मर्म को सर्व प्रथम महर्षि दयानंद ने पहचाना था। कृषि प्रधान देश होने के कारण गो वंश को भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ मानकर उन्होंने ब्रिटिश सरकार से गो हत्या के कलंक को दूर करने की बात की थी। ब्रिटिश भारत वायसराय के सम्मुख कार्यालय में सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द ने ही मैं अपनी मातृभूमि को (स्वतंत्र) स्वछंद राज्यों को पंक्तियों में खड़ा देखना चाहता हूँ। कहने का साहस किया था। आप ही ने स्वदेशी राज्य के आगे अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य को त्यागने की घोषणा कर भारतीयों की सुषुप्त राष्ट्रीय चेतना को झकझोरा था ।

राष्ट्र यज्ञ में जीवन समर्पित :–

नवजागरण के पुरोधा स्वामी दयानंद जी के राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जैसी विभूति ने अपना सर्वस्व स्वदेशी एवं स्वदेश की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, भाई परमानंद, राम प्रसाद बिस्मिल व सरदार भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों ने स्वामी दयानंद जी के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित होकर अपनी शक्ति व सामर्थ्य को पहचाना और भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने हेतु अपना सर्वस्व स्वतंत्रता के महान यज्ञ में समर्पित कर दिया। किसी भी देश की स्वतंत्रता तथा सामाजिक क्रांति का इतिहास उसके ही इतिहास पुरुषों, महापुरुषों व वीर वीरांगनाओं के जीवन चरित्र उस देश की सबसे अमूल्य धरोहर है। स्वाधीनता, न्याय तथा सत्य के लिए संघर्ष नामकों के जीवन की घटनाएं, प्रेरक प्रसंग भावी पीढ़ी को राष्ट्र व उसकी संस्कृति के महत्व की जानकारी देकर उनके हृदय में राष्ट्रभक्ति तथा नैतिक मूल्यों को पुष्ट करने का साधन बनते हैं।

क्या जाने इतिहास बेचारा :–

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास अत्यंत रोमांचकारी, प्रेरणादायक व समृद्धशाली है। इसके बावजूद स्वतंत्रता के बाद ऐसा कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया जो उन बालकों व युवा पीढ़ी को राष्ट्र व उसके महत्व से अवगत कराने के लिए स्वाधीनता सेनानियों के संघर्षमय जीवन से संबंधित इतिहास व प्रेरक प्रसंग, पाठ्यपुस्तकों में शामिल कर सकें। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा था–

कलम आज उनकी जय बोल
जला अस्थियां बारी–बारी,
छिटकाई जिसने चिंगारी।
जो चढ़ गए पुष्प बेदी पर,
लिये बिना गर्दन का मोल।
कलम आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी है उनकी महिमा के,
सूर्य, चंद्र, भूगोल खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल।
तुमने दिया राष्ट्र को जीवन,
राष्ट्र तुम्हें क्या देगा ?
अपनी आग तेज करने को नाम तुम्हारा लेगा।
है सबके सब अनमोल, कलम आज उनकी जय बोल।

अंग्रेजी शासन की पहली दस्तक :

सन् 1757 ई प्लासी में सिराजुद्दौला के प्रथम सेनापति मीर जाफ़र ने गद्दारी का चोला ओढ़ कर मुर्शिदाबाद की गद्दी तो हथिया ली, लेकिन इसके बदले में उसने क्लाइव (ईस्ट इंडिया कंपनी) को 71. 71 लाख रुपए की भारी रकम चांदी के सिक्कों में पहली किस्त के रूप में चुकानी पड़ी। यद्यपि मीर कासिम अपने ससुर मीर जफर की इस निर्लज्जता पर शर्मिंदा वह दुखी था, लेकिन बाद में वह भी क्लाइव की चालाकी का शिकार हुआ। उसने अपनी गद्दी के लालच में 1760 ईस्वी में वर्दमान, मिदानपुर एवं चटगांव के क्षेत्र की मालगुजारी वसूलने का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया। यह घटना ही भारत भूमि पर अंग्रेजी शासन की सबसे पहली दस्तक थी ।

कृषकों पर बेज्रपात :

कंपनी के अधिकारियों ने किसानों से बलपूर्वक मालगुजारी वसूल करने का अभियान चलाया। पूर्ववर्ती मराठा आधिपत्य से संतुष्ट कृषक समुदाय को अंग्रेजों का यह लूटमार का व्यवहार सहन नहीं हुआ। यह असंतोष में बदला और शक्ति के नशे में चूर कैप्टन व्हाइट ने जंगल महल के किसानों पर भारी वज्रपात किया। किसानों ने कुछ अंग्रेज अधिकारियों की पिटाई कर दी। अंत में कैप्टन व्हाइट की सेना ने दो तोपें लगाकर गांव पर चढ़ाई कर दी। तोपों से गोले वरसा कर गांवों को शोलों में बदल दिया, लेकिन यह किसानों के असंतोष को दबाने का असफल प्रयास था ।

1857 के संघर्ष की भीषण ज्वाला :–

1856 तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के समुद्री तटों पर मद्रास प्रेसीडेंसी, बंगाल प्रेसीडेंसी, मुंबई प्रेसिडेंसी नाम से तथा पारीक कोरिया स्थापित कर ली। इस प्रकार 100 वर्षों का कंपनी शासन का कुचक्र चलता रहा। राजाओं को आपस में लड़ा कर, तो कभी राजाओं को वफादार मंत्रियों का राज्य लिप्सा का लालच देकर कंपनी अपने राज्य का विस्तार करती रही। पिछले 90 वर्षों में भारतीय क्रांतिकारियों ने अपने रक्त के अर्घ्य से स्वाधीनता संग्राम की जो भूमिका तैयार की थी, उसकी परिणति '1857 के स्वतंत्रता संघर्ष' के रूप में फूट पड़ी। पहले बैरकपुर और फिर मेरठ से प्रारंभ हुई इस स्वतंत्रता संघर्ष की यज्ञाग्नि की ज्वाला में कंपनी शासन धू धू कर जल उठा। सारे देश में 'हर हर महादेव' की ध्वनियाँ गूंज उठी। जनता जनार्दन रूपी महादेव का तांडव प्रारंभ हुआ। लेकिन सुसंगठित वह आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित अंग्रेज सेना ने इस संघर्ष को बेरहम से नृशंसता पूर्वक कुचल डाला। इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में लाखों भारतीयों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। अंततः कंपनी शासन से मुक्ति तो मिली, लेकिन देश का दुर्भाग्य की भारत पुनः 1858 में कंपनी के ही पृष्ठपोषक ब्रिटिश साम्राज्य के चुंगल में फंस गया ।

स्वतंत्रता संघर्ष का अभिनव अभियान (कुका आन्दोलन) :–

1857 की स्वतंत्रता संग्राम की यज्ञाग्नि की ज्वाला अभी शांत नहीं हुई थी, इसी संघर्ष से प्रेरित होकर पूर्व से पश्चिम तक तथा उत्तर से दक्षिण तक राजा महाराजाओं ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजा दिया, लेकिन अंग्रेजी साम्राज्यवाद की जड़ें इतनी गहरी थीं कि उन्हें अभी उखाड़ना आसान नहीं था। इसी प्रयास में 1866 से लेकर 1872 तक गुरु राम सिंह के नेतृत्व में कूका आंदोलन प्रारंभ हुआ। गुरु राम सिंह ने पंजाब में जगह–जगह ब्रिटिश सरकार के समानांतर अपनी व्यवस्था चालू कर दी। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वदेशी का नारा दिया। ब्रिटिश सरकार ने सैकड़ो कूकाओं को तोपों से उड़ाकर एवं फांसी पर लटका कर कूका आंदोलन को भी ठंडा कर दिया। गुरु राम सिंह को गिरफ्तार कर रंगून की जेल में डाल दिया गया। 1872 में इन्होंने यहीं अंतिम सांस ली ।

फूटा रक्तबीज एवं स्वदेशी का अहवान :

महर्षि अरविंद ने भवानी मंदिर के माध्यम से तत्कालीन युवा–पीढ़ी को क्रांति का प्रेरक संदेश दिया। ब्रिटिश सरकार ने "फूट डालो और राज करो" की नीति अपनाते हुए। 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया। लेकिन वंदे मातरम की गूंज ने सारे देश में विभाजन के विरुद्ध ऐसी चेतना जागृत कर दी कि ब्रिटिश सरकार ने 'वंदे मातरम' बोलने पर ही प्रतिबंध लगा दिया। गुरु राम सिंह का स्वदेशी का नारा अब रंग लाया। यही समय था जब पंजाब के आर्यसमाजी नेता टहल राम, गंगाराम ने प्रथम बार छात्रों में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी। स्वदेश के नारे से विदेशी वस्तुओं का आयात इतना कम हो गया कि सरकार को घुटने टेकने पड़े। बंगाल विभाजन रद्द करना पड़ा। लोकमान्य तिलक से प्रेरणा लेकर विनायक दामोदर सावरकर ने लंदन पहुंचकर स्वाधीनता के लिए जन जागरण किया। उन्होंने 1857 का प्रथम स्वाधीनता समर ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना की। सावरकर की गतिविधियों ने ब्रिटिश सत्ता को हिला डाला। उन्हें गिरफ्तार कर भारत लाकर मुकदमा चलाया गया। 1909 में मदनलाल ढींगरा द्वारा कर्जनवायली की हत्या तथा 1912 में दिल्ली के चांदनी चौक में वायसराय पर प्राण घातक हमला ने यह सिद्ध कर दिया की अंग्रेजी नीतियों के विरुद्ध क्रांतिकारियों के साहस को समुद्री सीमाएं नहीं बाँध सकती। विदेशों में लड़ा गया स्वतंत्रता संघर्ष इसी तथ्य का साक्षी है। श्याम जी कृष्ण वर्मा, मैडम वीरभाई कामा, मोहम्मद बाराकल्लाह आदि अनेक भारत मां के सपूतों ने विदेश में भी वंदे मातरम की ध्वनि से स्वाधीनता संग्राम की ज्योति को प्रचंडता प्रदान की।

अहिंसक क्रांति के पुरोधा महात्मा गाँधी का उदय :– सन् 1919 में भारतवर्ष के क्षितिज पर एक ऐसा सितारा दिखाई पड़ा। जिसने अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो दिया। महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन और सत्याग्रह के अनूठे प्रयोग से समस्त भारत के जन–जन के मन में ऐसी राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ कि जहां लोग जेल जाने से घबराते थे एवं देश हित में भी जेल जाने वालों को हीनदृष्टि से देखा जाता था। वहीं अब लोग जेल जाना गौरव की बात समझने लगे अहिंसा के मार्ग द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति की घोषणा से स्वतंत्रता की लड़ाई का परिदृश्य ही बदल गया। ब्रिटिश सरकार ने अहिंसात्मक आंदोलनकारियों पर लाठी गोली और बम बरसा कर हिंसा का खूब तांडव खेला। अहिंसात्मक क्रांति की ज्वाला सैकड़ो बेगुनाओं के साथ–साथ लाला लाजपत राय को भी ले गई। यतींद्रनाथ दास, माता कस्तूरबा एवं बहन सत्यवती जैसी अहिंसक क्रांति की अग्नि शिखाओं ने जेल की सीखचों में ही दम तोड़ दिया। ज्योतिर्मयी गांगुली की पुलिस के ट्रक ने कुचलकर जान ले ली ।

सशत्र क्रांति की संकल्पना : अहिंसात्मक क्रांति वीरों पर हिंसा का तांडव देखकर रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, चंद्रशेखर आजाद तथा सरदार भगत सिंह जैसे क्रांतिवीर इस निर्णय पर पहुंचे कि ब्रिटिश सरकार अहिंसा को हमारी कायरता समझ रही है। बिना शक्ति के अहिंसा अधूरी है। उनका विचार था कि अहिंसा की भावना के पीछे जब तक अंग्रेजों को भारतीयों की शक्ति का भय नहीं होगा तब तक अंग्रेज भारत की गद्दी छोड़ने वाले नहीं हैं। अतः सरदार भगत सिंह ने जेल से महात्मा गांधी को पत्र लिखा "सत्याग्रह सच, पर हठ है। सच को अकेले आत्मीय बल द्वारा ही अपनाने के लिए दबाव क्यों ? क्यों ना इसमें शारीरिक बल भी जोड़ दिया जाये। क्रांतिकारी आत्मिक बल के साथ–साथ शारीरिक व नैतिक हर प्रकार की ताकत के साथ आजादी हासिल करने हेतु मैदान में खड़े हैं।" इसी सोच के साथ क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों का उसी भाषा में जवाब देना आरंभ कर दिया। 'काकोरी कांड' तथा 'सांडर्स बध' इसी का परिणाम था। क्रांति

की मसालें हाथ में थामे हुए चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, अशफाक उल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे सैकड़ो क्रांतिवीर मातृभूमि की आजादी की खातिर बलिदान हो गए ।

"सरजमीं इंग्लैण्ड की हिल जायेगी दो रोज में
गर दिखायेगी कभी तासीर वंदेमातरम्।
सन्तरी भी कभी मुज्तरिब थे जबकि 'बिस्मिल'
झूमकर बोलती थी जेल में जंजीर वंदेमातरम्।।"

क्रांतिदूत सुभाष की हुंकार : – महात्मा गांधी व सुभाषचंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की दो महान हस्तियां मानी जाती हैं। जहाँ महात्मा गाँधी जन–जन में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले अहिंसात्मक आंदोलन के जनक थे वही सुभाषचंद्र बोस राष्ट्र के युवकों में क्रांतिकारी चेतना का स्फुरण करने वाले क्रांति दूत थे। 'शत्रु का शत्रु अपना मित्र' नेताजी की नीति थी। नेताजी ने बड़ी विकट एवं प्रतिकूल परिस्थिति में देश से बाहर जाकर यूरोप एशिया के प्रवासी भारतीयों का संगठन तैयार किया। अंग्रेजी सेना के जर्मन व जापान द्वारा गिरफ्तार भारतीय सैनिकों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति जो आस्था थी उन्हें उस आस्था से विमुख करना एवं उनमें मातृभूमि भारत के प्रति आस्था एवं श्रद्धा जागृत करना बड़ी भारी चुनौती थी। किंतु नेताजी ने हर चुनौती का साहस के साथ मुकाबला किया सुभाष की हुंकार "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" ने यूरोप और एशिया के प्रवासी भारतीयों में भारत की आजादी हेतु सर्वस्व समर्पण की लहर पैदा कर दी। 'दिल्ली चलो' नारे ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला डाली। अंतरिम आजाद हिंद सरकार की ओर से ब्रिटिश एवं अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा ने द्वितीय विश्व युद्ध का परिदृश्य बदल डाला। सीमा पर आजाद हिंद फौज के 26000 सैनिकों का बलिदान बाद में रंग लाया।

ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील :– आजाद हिंद फौज के 17000 सैनिक गिरफ्तार किए गये। इन सैनिकों पर दिल्ली के लाल किले में मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा ही ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील साबित हुआ। इस मुकदमे का परिणाम 3 जनवरी 1946 को "गजट ऑफ इंडिया एक्ट ऑर्डिनरी" में प्रकाशित हुआ। इस मुकदमे से भारतीय जल, थल व नभ तीनों रॉयल सेनाओं के भारतीय सैनिकों में खलबली मच गयी। अभी तक अंग्रेजों ने तीनों सेनाओं एवं भारतीय जनता में यह प्रचारित किया था कि आजाद हिंद फौज जापान की कठपुतली सेना है। नेताजी भारत के साथ गद्दारी करके जापान से मिल गये। इसी मुकदमे के कारण ब्रिटिश भारतीय सेनाओं की राष्ट्रीय चेतना जगी। परिणाम स्वरूप 18 फरवरी 1946 को रॉयल इंडियन नेवी के भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजा दिया। लंदन की संसद को गुप्त सूचनाए मिल रही थी कि जल, थल व नभ तीनों सेनाओं में विद्रोह की ज्वाला सुलग रही है। अब भारत को और अधिक गुलाम बनाये रखना खतरे की घंटी साबित हो सकती है। अगले ही दिन 19 फरबरी को ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली ने भारत को सत्ता हस्तांतरण की घोषणा कर दी। देश की स्वतंत्रता में लाखों बाल, वृद्ध, नर–नारी बलिदान हुए ।

"यदि देश के हित मरना पड़े,
मुझ को सहस्त्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को
निज ध्यान में लाऊं कभी।।
हे ईश भारतवर्ष में शतबार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशीय कारक कर्म हो।"

रक्षा बन्धन का महत्व

रश्मि श्रीवास्तव
प्राचार्य
सरस्वती बालिका वरिष्ठ मा. विद्यालय,
गोरखपुर

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल:।
तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल:।।

रक्षाबन्धन का पर्व हमारी संस्कृति में नवीन नहीं है। यह हमारी आदि परम्परा का अंग है। प्राचीन काल में वैदिक परम्पराएँ व्यापक थी गुरु अपने शिष्यों को श्रावण पूर्णिमा के दिन रक्षा सूत्र बाँधते थे। वेदों का अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व रक्षासूत्र बांधकर दीक्षा प्रदान की जाती थी।

भविष्य पुराण के 137 वें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर से रक्षाबन्धन के इतिहास पर चर्चा की, जिसमें बताया जाता है कि देवासुर संग्राम में इंद्र की पत्नी शचि ने अपने पति को रक्षासूत्र बाँधकर युद्ध पर भेजा था। इस सूत्र की शक्ति के कारण ही इंद्र भयंकर संघर्ष में असुरों को परास्त करने में सफल हुए। रक्षाबन्धन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। प्राचीन परम्परा के अनुसार ऋषि–मुनि यज्ञ करते थे तथा वे देश के राजाओं को अपनी धार्मिक क्रियाओं के लिए वचनबद्ध करते थे। राजा उन्हें रक्षा का वचन देकर आशीर्वाद प्राप्त करते थे।

पौराणिक एवं धार्मिक महत्व के अतिरिक्त इस पर्व का सामाजिक महत्व भी है। भारतवर्ष में ही नहीं वरन संसार भर में भाई–बहन का स्नेह अत्यधिक पावन माना गया है। इसी पवित्र स्नेह के कारण प्रत्येक भाई का कर्तव्य होता है कि वह अपनी बहन की सुरक्षा का दायित्व लें।, कच्चे सूत के दो नन्हें धागे, बहन–भाई को प्रेम एवं दृढ़ता के स्नेह सूत्र में बांध देते हैं। आज भी प्रत्येक भारतीय के हृदय में अपनी बहन द्वारा बाँधी हुई राखी का उतना ही स्नेह एवं आदर है जितना प्राचीन काल में। महाभारत के समय एक बार भगवान कृष्ण की अंगुली में चोट लग गई थी और उससे रक्त निकल रहा था यह देखकर द्रौपदी में अपने आँचल के पल्लू को फाड़कर उनकी कटी अंगुली पर बाँध दिया। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी दिन से रक्षासूत्र बाँधने की परम्परा का सूत्रप्राप्त हुआ।

सामाजिक सौहार्द की दृष्टि से भी रक्षाबंधन पर्व समाज के लिए उपयोगी है। यह पर्व जहाँ भाई–बहन को एक सूत्र में बाँधकर उनके प्रेम को अटूट बनाता है वही दूसरी ओर सामाजिक विषमता को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है। यह छुआछूत एवं वर्ग विषमता समाप्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह ऐसा सामाजिक पर्व है जो हमारे हृदय के दूषित मनोविकारों को नष्ट कर पवित्रता के भाव का संचार करता है। यह पर्व आज के समय में सर्वाधिक प्रासंगिक बन गया है।

हम सीमा पर अर्हनिश सजग प्रहरी के रूप में कार्य कर रहे आपने बन्धुओं को रक्षासूत्र बाँधकर उन्हें आत्मीयता एवं परिवार भाव का बोध करा सकते है। हमारे उपेक्षित क्षेत्र, समस्या ग्रसित बन्धु बान्धवों के बीच इस सांस्कृतिक पर्व को मनाकर सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता, भाईचारे एवं सौहार्द के सूत्र में बाँध सकते है।

अतः रक्षाबंधन का पर्व धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता का पर्व है। यह भाई–बहन के प्रेम का पर्व है तो दूसरी ओर सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता का पर्व है। इस पर्व के द्वारा हम सभी के सुख समृद्धि यश एवं कल्याण की कामना करते है।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

परिवार का संस्कारक्षम वातावरण

संकलनकर्ता
उमाशंकर मिश्र

संस्कार व बाल विकास :

दो तीन वर्ष की आयु के बच्चों को देखकर प्रत्येक मनुष्य के मन में असीम आत्मीयता व पवित्रता का भाव पनपता है। उनके जीवन की सरलता, पवित्रता, निःस्वार्थता, क्रियाशीलता को देखकर लगता है कि वे ऐसे संसार से पधारे हैं जो अपने जगत से भिन्न हैं। इसीलिये तो उन्हें हम मानव सन्तान न कहकर देव पुत्र कहते हैं, उनमें भगवद् रूप का दर्शन करते हैं।

वे देवपुत्र जैसे–जैसे बड़े होते जाते हैं, उनका स्वरूप बदलता जाता है। वह विकास उत्तम भी हो सकता है व हानिप्रद भी । बाल विकास के इस कार्य में महत्ता दो चीजों की हैं (1) पैत्रिकता (2) वातावरण। बच्चे जो कुछ सीखते हैं, समझते हैं, अनुभव करते हैं उसका आधार है ज्ञानेन्द्रियाँ अर्थात आँख, कान, नाक जिह्वा व त्वचा। अतः यदि उनमें संस्कार विकसित करना है, उनकी क्षमता व प्रतिभा को प्रगट करना है, उन्हें सचमुच घर का दीप व जग का दिवाकर बनाना है तो उस वातावरण को प्रभावी व संस्कार क्षम बनाना होगा जिसके मध्य उनका जीवन व्यतीत होता है। उनका सर्वाधिक समय बीतता है। परिवार में अतः पारिवारिक वातावरण में संस्कार क्षमता का विकास नितान्त आवश्यक है। उसका स्वरूप कैसा चाहिये? इस पर हम विचार करके देखें।

परिवार का संस्कारश्रम वातावरण

1. आत्मीयता– बच्चे का स्वभाव है देखकर सीखना व सुनकर सीखना। उपदेशों व आदेशों का उनकी तुलना में प्रभाव कम होता है। अतः पारिवारिक दृश्य में चाहिये विभिन्न सदस्यों के मध्य सम्बन्धों की सरसता, आत्मीयता व समरसता। पारस्परिक टकराव, विरोध व आक्रोश दुःखद संस्कारों को जन्म देगा।

2. आनन्दमयी दृश्य :– पारिवारिक वातावरण में आनन्दमयी दृश्य तो उपयोगी होता है परन्तु उसमें मात्र मनोरंजन नहीं चाहिये। टी.वी. के दृश्यः रेडियों के गीत, संगीत नृत्य एवं कला में उन दृष्यों को देखने की प्राथमिकता देनी चाहिये जो आनन्द व सद्संस्कार विकसित कर सके, प्रेमालाप के गीत, वासनामयी दृश्य घातक होंगे। रामायण सीरियल के प्रभाव का सभी ने अनुभव किया होगा।

3. वाणी की सरसता – बच्चे कान से जो शब्द सुनते हैं वही सीखते हैं। इसी कारण बच्चे अपने माता–पिता को डैडी– पापा, मम्मी, दीदी, माता जी पुकारना प्रारम्भ कर देते हैं। तुम, तू शब्द सुनते हैं तो वे भी यही बोलने लगते हैं। अतः वाणी की सरसता, उच्चारण की शुद्धता, सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग नितान्त आवश्यक है। आप, जी श्री. भगवन शब्दों का प्रयोग करने से बच्चों की वैसी ही आदत बनने लगती हैं।

4. संरक्षण व स्नेह :–बच्चों का एक अन्य स्वभाव होता है संरक्षक की उपस्थिति में उत्साह व कर्मठता का प्रगटीकरण। पिता की उपस्थिति में उन्हें कूदनें, फाँदने में डर नहीं लगता है। हिम्मत बढ़ती है। संरक्षण का आधार होता हैं स्नेहमयी भाव व सुरक्षा की चिन्ता । पारिवारिक वातावरण में उसकी अनुभूति उसके लिये नितान्त आवश्यक है।

5. सज्जा– बच्चों में जागृत करना चाहते हैं भक्ति व समर्पण, कर्तव्यपालन तथा श्रमनिष्ठा तो दृश्य उसी प्रकार के चाहिये। मकान में सज्जा निर्जीव चीजों से भले ही हो। परन्तु योजनापूर्वक चाहिये। बच्चे को बनाना चाहते हैं, ध्रुव, प्रहलाद, चन्द्रशेखर आजाद, लक्ष्मीबाई या दुर्गावती परन्तु घर में चित्र लगते हैं।

फिल्मी अभिनेताओं व अभिनेत्रियों के विकसित करना चाहते हैं जीवन की पवित्रता परन्तु चित्र है प्रेमालाप, वासना व विद्रोह के तो परिणाम सुखद न होंगे। सज्जा व्यवस्था में विदेशी दृश्य तो और घातक सिद्ध होंगे। अतः स्वच्छता व व्यवस्थितता के साथ–साथ सज्जा व्यवस्था संस्कारों के अनुरूप चाहिये ।

6. भोजन :—परिवार में भोजन व्यवस्था की रचना करते समय पाश्चात्यीकरण की पद्धति में व्यक्तिवाद पनपता है। मनोरंजन का भाव जागृत होता है। परन्तु भारतीय पद्धति में शुद्धता, सरसता, पारिवारिक भाव व भक्ति पनपती है। भोजन करने से पूर्व परम पिता परमेश्वर को भेंट कर के प्रसाद रूप में ग्रहण करना, स्वयं भोजन करने से पूर्व गोमाता व पशु पक्षियों तथा अतिथियों को भेंट देना, भोजन मंत्र के साथ शुभारम्भ, परिवार में सामूहिक भोजन की व्यवस्था, व्यवस्थित ढंग भोजन परोसने की पद्धति व अनुरोधपूर्ण वातावरण को सुखदायी व प्रभावी बनाता है।

7. साहित्य संकलनः— बच्चों की प्रवृत्ति होती है वस्तुओं के संकलन करने की। चाँक, खिलौनें, चित्रा, पत्थर, गोली उनका संकल्प सभी देखते है। चित्रमयी कथायें पढ़ने में उनकी विशेष रूचि होती है। अतः विभिन्न अवसरों पर ऐसे साहित्य को लाना, बच्चों को देना, घर में रखना उसके जीवन में सद्संस्कार पनपाता है।

8. भक्ति भाव— परिवार में भक्तिभाव जागृत करने के लिये विविध क्रियाकलापों का आयोजन आवश्यक हैं। प्रातः काल उठकर अपने से बड़ों का चरण वन्दन, प्रातः स्मरण, एकात्मतास्तोत्र एकता मंत्रों का पाठ, रात्रि में शयन करने से पूर्व भगवान का पुण्य स्मरण व अपनी भूलों के लिए क्षमायाचना तथा पूजास्थल का पर्दा बन्द करके भगवान को विश्राम देना सब भक्तिभाव को जागृत कर सकता है। पाश्चात्य जीवन की पद्धति से रात्रि में देर से विश्राम, प्रातः विलम्ब से जागरण, बिना शौच गये व मुँह धोये चाय का पान, समाचार पत्र का पढ़ना यह सब काम आदतों को बिगाड़ते हैं।

9. उत्सव एवं पर्व—प्रत्येक परिवार में विविध प्रकार के उत्सव व पर्वो का आयोजन होता है। रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, विजयादशमी, दीपाली, मकरसंक्रांति, वसन्तपंचमी, होलिकोत्सव आदि एक श्रेणी है। विवाह व जन्मोत्सव दूसरी श्रेणी है। प्रथम श्रेणी को यदि शुद्ध रूप से मनाया जाये तो जीवन में संयम, सांस्कृतिक गौरव तथा सामाजिक दृष्टि का भाव पनपता है तथा भक्ति भावना विकसित होती है। महत्व जातीयता व कर्मकाण्ड को न देकर शुद्धता, पवित्रता व आचरण को दिया जाना आवश्यक है। जन्मोत्सव के अवसर पर यदि दीपक बुझाये गये, अंग्रेजी के गीत गाये गये, भेंट सामग्री को प्राथमिकता दी गई तो पाश्चात्य जीवन पद्धति के अनुसार व्यक्तिवाद तथा वर्गवाद पनपेगा परन्तु, भारतीय पद्धति में संरक्षण, समर्पण व भक्ति भाव विकसित नहीं होता है।

वैवाहिक प्रसंगों पर विदेशी वेशभूषा, पाश्चात्य संगीत व नृत्यों का दृश्य कैसा विलक्षण स्वरूप प्रस्तुत करता है। यह सभी को ज्ञात हैं। अतः उन उत्सवों व पर्वो में सांस्कृतिक माहौल में भारतीय संस्कारों व पद्धतियों को महत्त्व देना अधिक प्रभावी होगा। जीवन की दृष्टि में पवित्रता, संयम, सद्संस्कारों को विकसित करने के लिये यह आवश्यक है।

अभिभावक सम्पर्क वाल विकास के पुनीत कार्य में सफलता प्राप्ति के लिये पारिवारिक वातावरण में यह संस्कारक्षमता अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। वस्तु स्थिति क्या है ? उसे देखना, समझना व आकंलन करना यह आवश्यक है। उसके लिए पहिले बच्चों से अभिन्न सम्बन्धों की स्थापना करना, अभिभावक गणों का विश्वास सम्पादन करना तथा दोनों की आत्मीयता व आग्रह के आधार पर परिवारों में जाना।

बंद नाक, टांसिल और खांसी का उपचार

—उषा भण्डारी

दीपक ने पूछा– दादा जी! नाक बंद हो गई हो तो क्या करें ? बीच में राजू बोला गरम पानी की भाप लेने से बंद नाक खुल जाती है।

दादा जी ने कहा– हाँ, गरम पानी की भाप लेने से नाक खुल जाती है। दादा जी ने आगे बताया–शुद्ध सरसों के तेल की दो–तीन बूँद दोनों नथुनों में रात को सोते समय डाले। इससे बंद नाक खुल जाती है। यदि ऐसा एक माह तक लगातार करें। तो सालों पुराना जुकाम, नकसीर और सिर दर्द ठीक हो जाता है। मीरा ने पूछा–दादा जी! गलसुढे (टॉंसिल) बढ़ जाएँ।

गले में सूजन आ जाए तो क्या करना चाहिए? दादा जी ने पूछा–सुनीता ! यह बताओ कि शहर के डॉक्टर इस बीमारी में दवा के साथ–साथ क्या सलाह देते हैं?

सुनीता ने कहा– गुनगुने पानी में चुटकी भर नमक डालकर गरारे करने को कहते हैं। ऐसा दिन में तीन बार करने की सलाह देते हैं।

दादा जी ने बताया– हाँ, ऐसा करने से लाभ होता है। दादा जी ने आगे कहा एक गिलास गुनगुने पानी में एक नींबू निचौड़ दें। उसमें थोड़ा शंक्कर या नमक मिलाकर गरम–गरम पी लें।

दादा जी ने कहा– चुटकी भर हल्दी या पीसी हुई काली मिर्च मिलाकर गरम–गरम दूध पीना चाहिए। ऐसा तीन–चार दिन तक सुबह शाम करें। इससे गले की सूजन और टॉंसिल में बहुत लाभ होता है।

राजू ने कहा–दादा जी ! खाँसी का उपचार भी आज ही बता दीजिए ?

दादा जी ने कहा– ठीक है सोने से पहले खाँसी के कुछ उपाय बताता हूँ ये उपाय निमोनिया में भी लाभ करता है। दादा जी ने आगे बताया–तुलसी के 10–10 पत्ते और थोड़ा–सा काली मिर्च का चूरन एक गिलास पानी में उबाल लें। जब पानी आधा रह जाए तब छान लें और ठण्डा होने पर पी जाएँ। दूसरा उपाय बताते हुए दादा जी ने कहा–एक चम्मच शहद और आधा चम्मच अदरक का रस लें। दोनों को मिलाकर रोगी को दिन में तीन बार चटाएँ। दादा जी ने फिर बताया तुलसी के पत्तों का काढ़ा पीने से सूखी खाँसी ठीक हो जाती है।

दादा जी ने अगला उपाय बताया–काली मिर्च को पीसकर छान लें। चुटकी भर चूरन को एक चम्मच शहद में मिलाकर रोगी को दिन में दो बार चटाएँ। इससे खाँसी में कम समय में आराम मिलता है।

राजू ने जानना चाहा–ऐसा कितने दिन तक किया जाना चाहिए ?

दादा जी ने कहा– वैसे चार–पाँच दिन में खाँसी बिल्कुल ठीक हो जाती है। आवश्यकता पड़ने पर अधिक दिन तक भी घरेलू दवा ले सकते हैं। इतना बंताकर दादा जी ने बच्चों से कहा चलो जाकर सो जाओ।

भारतीयता की अनुभूति है कृष्ण जन्माष्टमी

—ऋचा सिंह

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का महत्व

त्योहार किसी भी देश एवं उसकी संस्कृति के संवाहक होते हैं। त्योहारों के कारण ही हमें अपनी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति को जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त होता है। यदि त्योहार नहीं होते, तो हमें अपने देवी–देवताओं एवं महापुरुषों तथा उनके जीवन के संबंध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। त्योहारों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूर्ण विधि विधान से भारत सहित विश्व के विभिन्न भागों में धूमधाम से मनाई जाती है। इस त्योहार का न केवल धार्मिक महत्व है, अपितु इसका सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक महत्व भी है।

धार्मिक महत्व

श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं। भगवान विष्णु ने भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि को देवकी एवं वासुदेव के पुत्र के रूप में जन्म लिया था। मान्यताओं के अनुसार मथुरा नरेश कंस बहुत अत्याचारी था। वह प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। उसका नाश करने के लिए भगवान विष्णु ने मथुरा में जन्म लिया था। कहा जाता है कि कंस अपनी बहन देवकी से अत्यधिक स्नेह करता था। एक दिन वह अपनी बहन को लेकर कहीं जा रहा था, तब आकाशवाणी हुई कि जिस बहन से तू इतना स्नेह करता है उसी के आठवें पुत्र के हाथों तेरा वध होगा। इस भविष्यवाणी को सुनकर कंस बहुत भयभीत हो गया तथा उसने अपनी बहन एवं उसके पति को कारागार में बंद कर दिया। मृत्यु के भय के कारण उसने अपनी बहन के सात नवजात शिशुओं का वध कर दिया। देवकी के आठवें पुत्र के जन्म के समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी तथा अंधकार व्याप्त था। श्रीकृष्ण का जन्म होते ही देवकी एवं वासुदेव की बेड़ियां खुल गईं। कारागार के द्वार भी स्वयं ही खुल गए तथा पहरेदार सो गए। वासुदेव उफनती हुई

यमुना पार करके अपने पुत्र को गोकुल ग्राम में अपने मित्र नन्द के घर ले गए। वहां नन्द की पत्नी यशोदा ने एक कन्या को जन्म दिया था। नन्द ने श्रीकृष्ण को अपनी पत्नी के पास लिटा दिया और अपनी पुत्री वासुदेव को सौंप दी। जब वासुदेव कारागार आ गए तो सबकुछ पूर्व की भांति हो गया। शिशु के जन्म का समाचार प्राप्त होते ही कंस वहां आया तथा उसने कन्या को पटक कर मारना चाहा, किन्तु वह यह कहते हुए आकाश की ओर चली गई कि तुझे मारने वाला जन्म ले चुका है। इसके पश्चात कंस ने अपने राज्य के सभी नवजात बालकों की हत्या करने का आदेश दे दिया। उसके सैनिक घर–घर जाकर नवजात शिशुओं को खोजते तथा उन्हें मौत के घात उतार देते। कंस के अत्याचारों से तंग आकर बहुत से लोग राज्य छोड़कर जाने लगे, परन्तु सभी ऐसा नहीं कर सकते थे। दिन–प्रतिदिन कंस के अत्याचार बढ़ते ही जा रहे थे। कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के भी अनेक प्रयास किए, किन्तु बाल्यकाल में ही श्रीकृष्ण ने अपने कंस द्वारा भेजे गए सभी राक्षसों को मार दिया। युवा होने पर

उन्होंने कंस को मारकर मथुरा को उसके अत्याचारों से मुक्त करवाया। श्रीकृष्ण का पालन–पोषण गोकुल में नन्द बाबा के घर में हुआ। श्रीकृष्ण की अनेक लीलाएं हैं, जो उल्लेखनीय हैं। इन पर असंख्य साहित्यिक ग्रंथ लिखे गए हैं।

हिन्दुओं का प्रमुख ग्रंथ भगवद गीता श्रीकृष्ण की वाणी है। उन्होंने महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को कुरुक्षेत्र में जो उपदेश दिए थे, वे इसमें संकलित हैं। इसमें धर्म, कर्म, भक्ति, प्रेम, वैराग्य एवं मोक्ष आदि का उल्लेख मिलता है। इसमें जीवन दर्शन है तथा जीवन का सार भी है।

सांस्कृतिक महत्व

भारत सहित विश्वभर के हिन्दू बहुल देशों में जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस त्योहार पर मंदिरों की साज–सज्जा की जाती है। उनमें रंगोलियां भी बनाई जाती हैं। श्रद्धालु उपवास रखते हैं। वे पूजा–अर्चना करते हैं। सत्संग एवं कीर्तन भी किए जाते हैं। बहुत से मंदिरों में 'भागवत पुराण' एवं 'भगवद गीता' का पाठ होता है। नाट्य मंडलियों द्वारा कृष्ण लीला का आयोजन किया जाता है। नाटय मंचन में गीत एवं नृत्य भी सम्मिलित रहता है। नगर में शोभायात्रा भी निकाली जाती है। इन सब आयोजनों से श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन एवं उनके कार्यों की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार बालक बाल्यकाल से ही अपने देवी–देवताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। समय का चक्र घूमता रहता है। तदुपरांत यही बच्चे अपने त्योहारों पर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन करके ये ज्ञान अपने बच्चों को देते हैं। इसी प्रकार ये ज्ञान निरंतर आगे बढ़ता रहता है। इन आयोजनों के कारण रंगोली, भजन–कीर्तन, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का भी विकास होता है। त्योहार हमारी शास्त्रीय एवं लोक कलाओं के भी संवाहक हैं। इनके कारण ही अनेक कलाएं फलफूल रही हैं, वरन ये कब की लुप्त हो चुकी होतीं।

विदेशों में जन्माष्टमी मनाए जाने के कारण भारतीय संस्कृति विश्व के कोने–कोने में पहुंच रही है। जिस समय विश्व के अनेक देश अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए थे, उस समय भी हमारी संस्कृति अपने शिखर पर थी।

सामाजिक महत्व

त्योहारों का सामाजिक महत्व भी हैं। श्रीकृष्ण ने विश्व को प्रेम, करुणा, न्याय एवं सद्भाव का संदेश दिया। सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने के लिए इन्हीं गुणों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। जन्माष्टमी भी इसी सद्भाव को बनाए रखने का संदेश देती है। वास्तव में जब एक परंपरा के लोग आपस में मिलकर कोई त्योहार मनाते हैं तो उनमें प्रेम एवं भाईचारे का संचार होता है। इसके अतिरिक्त यदि अन्य धर्म एवं पंथ के लोग इसमें सम्मिलित होते हैं, तो इससे सामाजिक सद्भाव, प्रेम एवं भईचारा बढ़ता है। भारतीय संस्कृति भी ऐसी ही अर्थात सबको अपनाने वाली। हमारा आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम' है अर्थात पूरा विश्व एक परिवार है। यह वाक्य सदैव से ही प्रासंगिक रहा है, क्योंकि यह वैश्विक स्तर पर सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता देता है। यही भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है, जो इसकी महानता का प्रतीक है।

अन्य त्योहारों की भांति जन्माष्टमी पर भी भंडारे किए जाते हैं, जिनमें प्रसाद वितरित किया जाता है तथा सामूहिक भोजन ग्रहण किया जाता है। मंदिरों के अतिरिक्त बाजारों में भी भंडारों का आयोजन किया जाता है। लोग चंदा एकत्रित करके भी भंडारे करते हैं। अनेक स्थानों पर क्षेत्र के लोग ही आपस में सब्जियां, अनाज व अन्य खाद्य वस्तुएं एकत्रित करके भोजन बनाते हैं। इस कार्य में महिलाएं भी बढ़–चढ़कर भाग लेती हैं। भोजन बनाने से लेकर भोजन परोसने तक में उनका योगदान सम्मिलित रहता है।

इसके अतिरिक्त इन भंडारों के कारण उन लोगों को भी भरपेट स्वादिष्ट भोजन मिल जाता है, जो अभाववश स्वादिष्ट भोजन ग्रहण नहीं कर पाते

हैं। भंडारे में सब लोग मिलजुल कर भोजन ग्रहण करते हैं। यहाँ किसी प्रकार का भेदभाव अथवा ऊंच–नीच का भाव नहीं होता। यह सामजिक समरसता को बढ़ावा देता है। आज के समय में इसकी अत्यधिक आवश्यकता है।

आर्थिक महत्व

त्योहार आर्थिक गतिविधियों के भी केंद्र होते हैं। जन्माष्टमी से पूर्व ही इसकी तैयारियां प्रारंभ हो जाती हैं। मंदिरों को सजाया जाता है। इसके लिए बहुत से सजावटी सामान की आवश्यकता होती है, जिनमें बिजली की झालरें एवं पुष्प आदि भी सम्मिलत हैं। पुष्पों का एक बड़ा बाजार हैं, जिनमें असंख्य लोग लगे हुए हैं। पुष्प की खेती से लेकर फूल मालाएं बनाने वाले लोगों तक को रोजगार प्राप्त होता है। इसके साथ–साथ मिष्ठान वालों एवं हलवाइयों का कार्य भी बढ़ जाता है।

बाजारों में जन्माष्टमी से संबंधित सामान की भरमार देखने को मिलती है। इस सामान को बनाने वालों से लेकर बाजार में इन्हें विक्रय करने वालों को भी रोजगार प्राप्त होता है। जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति के विविध आयामों को मजबूत करता है एवं जीवन मूल्य तथा संबंध मूल्य को स्थापित करता है। निःसंदेह जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम है।

पहेलियाँ

1. ऐसी कौन सी चीज है जो काटने पर आवाज नहीं करती।
2. ऐसा कौन सा पेड़ है जिसमें लकड़ी नहीं होती।
3. ऐसी कौन सी चीज है जो ठंड लगने पर जला सकते हैं, भूख लगने पर खा सकते हैं, प्यास लगने पर पी सकते हैं।
4. ऐसी कौन सी चीज है पैर है चल नहीं सकती, आँख है देख नहीं सकती, कान हैं सुन नहीं सकती, मुंह है बोल नहीं सकती।
5. ऐसी कौन सी चीज जो मेरे सामने आये मैं उसे दुगना कर देता हूँ।
6. हाथ में लिए हरा है, मुंह में डाले तो लाल है। वह क्या है?
7. ऐसा कौन सी चीज है जिसको काटने पर कटता नहीं है।
8. ऐसी कौन सी जगह है जहाँ पर अमीर–गरीब दोनों कटोरा लेकर खड़े रहते हैं।

उत्तर- (1) दूध, (2) केला, (3) नारियल, (4) गुड़िया, (5) शीशा, (6) पान, (7) परछाई, (8) पानीपुरी की दुकान

घाघ की कहावतें

1. चैते गुड़, बैसाखे तेल, जेठे पंथ असाढ़े बेल।
   सावन साग न भादों दही, क्वार करेला न कातिक मही।
2. अगहन जीरा, पूसे धना माघे मिश्री फागुन चना।
   सावन हरै, भादों चीत, क्वार मास गुड़ खयउ मीत।
3. कातिक मूली, अगहन तेल,
   पूस में करें दूध से मेल।
   ई बारह जो देय बचाय,
   वहि घर वैद्य कबौ न जाय।
4. माघ मास घिउ खींचरी,
   खाय फागुन उठि के प्रात नहाय।
   चैत मास में नीम बेसहानी,
   बैसाखे में खाय जड़हानी।
5. फागुन मास बहै पुरवाई, तब गेहूं में मेरुई धाई।
   माघ पूस बहे पुरवाई, तब सरसों को माहूं खाई।
6. अगसर खेती, अगसर मार,
   कहै घाघ, ते कबहूं न हार।।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होने का समय

–डॉ. सौरभ मालवीय
लखनऊ विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर

पर्यावरण समस्या और समाधान

भारत सहित विश्व के अधिकांश देश पर्यावरण संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं। ग्रीष्मकाल में भयंकर गर्मी पड़ रही है। प्रत्येक वर्ष निरंतर बढ़ता तापमान पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ रहा है। देश में गर्मी के कारण प्रत्येक वर्ष हजारों लोग दम तोड़ रहे हैं। यह सब ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहा है। यह पृथ्वी की सतह का दीर्घकालिक ताप है, जो मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न हुआ है। विगत कुछ दशकों में जिस तीव्र गति से जलवायु परिवर्तन हो रहा है वह चिंता का विषय है। इसके भयंकर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। कहीं सूखा पड़ रहा है तथा भूजल स्तर बहुत नीचे चला गया है। लोग पेयजल के लिए त्राहिमाम कर रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली के निवासी भी जल संकट से जूझ रहे हैं। कहीं अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। दिल्ली के अनेक क्षेत्र भी बाढ़ की चपेट में आते रहते हैं। देश की राजधानी की इस स्थिति से पता चलता है कि समस्या कितनी गंभीर है। इससे देश के अन्य क्षेत्रों की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण भी मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है।

स्वार्थ से बढ़ा संकट

मानव अपने स्वार्थ के लिए निरंतर प्रकृति को हानि पहुंचा रहा है। वनों से वृक्ष काटकर उन्हें समाप्त किया जा रहा है। विकास के नाम पर भी वृक्ष काटे जा रहे हैं। पर्वतों में खनन किया जा रहा है। मानव ने वन समाप्त करके वन्य प्राणियों के लिए आश्रय एवं भोजन का संकट उत्पन्न कर दिया है। कृषि भूमि पर कॉलोनियां बसाई जा रही हैं। इससे कृषि भूमि कम हो रही है। अत्यधिक रसायनों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से उपजाऊ भूमि बंजर होती जा रही है। इससे निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्न का संकट उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक जल स्रोत तालाब, जोहड़ व अन्य जलाशय समाप्त हो रहे हैं। नदियां अत्यधिक दूषित एवं विषैली हो रही हैं। इससे जलीय जीवों के लिए संकट उत्पन्न हो गया है। प्लास्टिक कचरे से भी प्रदूषण बढ़ रहा है। इसलिए समस्त जीवों को बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' एवं 'आवरण' से मिलकर बना है अर्थात जो चारों ओर से घेरे हुए है वही पर्यावरण है। जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, हमें उसे संरक्षित करना होगा अर्थात हमें अपने चारों ओर के वातावरण को संरक्षित करना होगा तथा इसे जीवन के अनुकूल बनाना होगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, वन संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण तथा जैव विविधता संरक्षण पर गंभीरता से कार्य करना होगा। यह सर्वविदित है कि मानव शरीर पंचमहाभूत से निर्मित है, जिनमें आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी सम्मिलित है। प्राणियों के लिए वायु एवं जल अत्यंत आवश्यक है। उन्हें जीवित रहने के लिए भोजन भी चाहिए, जो भूमि से प्राप्त होता है। वनों से हमें जीवनदायिनी औषधियां प्राप्त होती हैं। इसलिए हमें वायु, जल, वन एवं मृदा को संरक्षित करना होगा।

जल संरक्षण के लिए प्राकृतिक रूप से बने जलाशयों को संरक्षित करना होगा। नए तालाब बनाने होंगे। जल संग्रहण करना होगा अर्थात वर्षा के जल को विभिन्न विधियों से संचित करना होगा। तालाब एवं जोहड़ों के अतिरिक्त भूमि के नीचे बनाए गए टैंक

के माध्यम से भी वर्षा जल संचयित किया जा सकता है। इसके साथ–साथ जल को व्यर्थ बहने से रोकना होगा। जितनी आवश्यकता हो, उतने ही जल का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त नदियों एवं अन्य जलाशयों को प्रदूषित होने से भी बचाना होगा।

मृदा का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए रिक्त पड़ी भूमि पर पौधारोपण किया जा सकता है। इससे एक ओर हरियाली में वृद्धि होगी, तो दूसरी ओर मृदा कटाव रुकेगा तथा भूमि ऊसर होने से भी बचेगी। इसके अतिरिक्त हानिकारक औद्योगिक कचरे को समाप्त करके भी भूमि को दूषित एवं ऊसर होने से बचाया जा सकता है। प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के थैलों का उपयोग करके प्लास्टिक कचरे को कम किया जा सकता है।

वनों का संरक्षण करके भी पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सकता है। वन संरक्षण का उद्देश्य यह कि वनों को कटने से बचाया जाए तथा अधिक से अधिक पौधारोपण किया जाए। यदि कहीं विकास कार्यों के कारण वृक्ष काटने अति आवश्यक हों, तो उनसे अधिक संख्या में पौधारोपण किया जाए, जिससे उनकी कमी को पूर्ण किया जा सके। वन विभिन्न प्राणियों के आश्रय स्थल हैं। इन्हें सुरक्षित रखकर वन्य जीवों के आश्रय स्थल की भी रक्षा की जा सकती है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए देश में कई अधिनियम हैं। इनमें भारतीय वन अधिनियम–1927, वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम– 1972, जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम– 1974 तथा 1977, वन संरक्षण अधिनियम–1980, वायु (प्रदूषण एवं नियंत्रण) अधिनियम–1981, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम–1986, जैव–विविधता संरक्षण अधिनियम– 2002, राष्ट्रीय जलनीति–2002, राष्ट्रीय पर्यावरण नीति– 2004 एवं वन अधिकार अधिनियम–2006 प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं।

सरकार पर्यावरण संरक्षण के लिए कई योजनाएं चला रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2021 में घोषित पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अभियान को आगे बढ़ाने के लिए, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने दो अग्रणी पहल की हैं। प्रथम ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम है, जो पर्यावरणीय गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान करता है। विगत 13 अक्टूबर, 2023 को अधिसूचित ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम एक अभिनव बाजार–आधारित व्यवस्था है जिसे व्यक्तियों, समुदायों, निजी क्षेत्र के उद्योगों और कंपनियों जैसे विभिन्न हितधारकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्वैच्छिक पर्यावरणीय कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसका शासन ढांचा एक अंतर–मंत्रालयी संचालन समिति द्वारा समर्थित है तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम के प्रशासक के रूप में कार्य करता है। यह कार्यक्रम कार्यान्वयन, प्रबंधन, निगरानी और संचालन के लिए उत्तरदायी है। यह प्रोग्राम अपने प्रारंभिक चरण में दो प्रमुख गतिविधियों जल संरक्षण और वनीकरण पर ध्यान केंद्रित करता है। ग्रीन क्रेडिट देने के लिए प्रारूप पद्धति विकसित की गई है और हितधारक परामर्श के लिए इसे अधिसूचित किया जाएगा। ये पद्धतियां प्रत्येक गतिविधि अथवा प्रक्रिया के लिए मानक निर्धारित करती हैं, जिससे सभी क्षेत्रों में पर्यावरणीय प्रभाव और प्रतिस्थापना सुनिश्चित की जा सके। एक उपयोगकर्ता–अनुकूल डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म परियोजनाओं के पंजीकरण, उसके सत्यापन और ग्रीन क्रेडिट जारी करने की प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करेगा। विशेषज्ञों के साथ भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा विकसित किया जा रहा ग्रीन क्रेडिट रजिस्ट्री और ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म, पंजीकरण और उसके बाद ग्रीन क्रेडिट के क्रय एवं विक्रय की सुविधा प्रदान करेगा।

द्वितीय ईकोमार्क योजना है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण–अनुकूल उत्पादों को प्रोत्साहन प्रदान करना है। पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली के पीछे

का दर्शन व्यक्तिगत विकल्पों और व्यवहार को स्थिरता की ओर ले जाना है। इस दृष्टिकोण के अनुरूप, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने अपनी ईकोमार्क अधिसूचना को फिर से तैयार किया है, ताकि उपभोक्ता उत्पादों के बीच चयन करने में सक्षम हो सकें और इस तरह उन उत्पादों को चुन सकें जो उनके डिजाइन, प्रक्रिया आदि में पर्यावरण के अनुकूल हैं। जो जलवायु परिवर्तन, स्थिरता और पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को प्रोत्साहन देने के लिए देश के सक्रिय दृष्टिकोण का संकेत देती हैं। ये योजनाएं परंपरा एवं संरक्षण में उपस्थित पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को प्रोत्साहित करती हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली की अवधारणा के विचारों को प्रदर्शित करती हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं– "हमारे लिए पर्यावरण की रक्षा आस्था का विषय है। हमारे पास प्राकृतिक संसाधन हैं क्योंकि हमारी पिछली पीढ़ियों ने इन संसाधनों की रक्षा की। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी ऐसा ही करना चाहिए।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निजी प्रयासों से भारत पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की दिशा में ठोस पहल करने वाला अग्रणी देश बना है। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों को दर्शाने वाली एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा था कि जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब गुजरात 'जलवायु परिवर्तन विभाग' वाला देश का प्रथम राज्य बना था। यह एक अनूठा प्रयास था, जबकि तब केंद्रीय स्तर पर पर्यावरण मंत्रालय ने भी जलवायु परिवर्तन की अवधारणा को एकीकृत नहीं किया था।

लोकसभा चुनाव के भारतीय जनता पार्टी के 'भाजपा का संकल्प मोदी की गारंटी 2024' नामक घोषणा पत्र में पर्यावरण का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इसमें कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गई पर्यावरण के लिए जीवन शैली की अवधारणा को विश्व ने स्वीकार किया है। इस मंत्र को साकार करने के लिए हमने पर्यावरण प्रबंधन के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। हम पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली में विश्व का नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम पारंपरिक ज्ञान के साथ–साथ आधुनिक प्रथाओं का उपयोग करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हों। हमने कई ऐसी योजनाएं क्रियान्वित की हैं, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा होगी। जैसे प्रधानमंत्री सूर्य का घर योजना, रेलवे का विद्युतीकरण, ई–बस, इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रसार एथेनॉल और बॉयो फ्यूल का उपयोग इत्यादि। इन सब योजनाओं से हम नेट जीरो के लक्ष्य की प्राप्ति की ओर तीव्र गति से अग्रसर हैं तथा इन योजनाओं से हमारे नागरिकों के लिए वातावरण सुनिश्चित होगा।

विगत विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाकर 'एक पौधा मां के नाम' नामक अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने एक्स पर लिखा था– 'मैंने प्रकृति मां की रक्षा करने और सतत जीवन शैली अपनाने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप एक पेड़ लगाया। मैं आप सभी से यह आग्रह करता हूं कि आप भी हमारे ग्रह को बेहतर बनाने में योगदान दें।'

इसमें दो मत नहीं है कि सरकारी प्रयास एवं जनभागीदारी से पर्यावरण को संरक्षण किया जा सकता है। हमें अपने बच्चों को भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना होगा, ताकि आने वाली पीढ़िये

महर्षि अरविन्द 'शिक्षाविद'

अरविन्द का जन्म 15 अगस्त 1872 में कलकत्ता के बंगाली परिवार में हुआ था। इनके पिता डॉक्टर कृष्णधन घोष कलकत्ता के प्रसिद्ध डॉक्टर थे। माता स्वर्णलता देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थी। पिता जी अरविन्द पर किसी प्रकार से भारतीयता के वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ने देना चाहते थे।

अरविन्द एक महान योगी गुरु होने के साथ–साथ एक महान दार्शनिक, कवि दृष्टा और राष्ट्रवादी थे। अरविन्द का कहना था कि चाहे जितने भी बादल घिरे हों, चाहे जितने खतरे हों, चाहे जितने कष्ट आएं, कठिनाइयाँ हो, चाहे जितनी असंभवनाएं आएं, कुछ भी असंभव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है। मैं इस देश और उसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी, वही होगा। दूसरों की इच्छा से नहीं।

महर्षि अरविन्द ने भारतीय शिक्षा अनुसार मानव सांसारिक जीवन में रहकर भी दैवी शक्ति प्राप्त कर सकता है। अरविन्द के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में जिज्ञासा, खोज विश्लेषण व संश्लेषण करने की प्रवृत्ति होती है। अतः विज्ञान द्वारा मानव प्राकृतिक वातावरण को समझता है। मस्तिष्क को प्रधानता देने के कारण अरविन्द पाठ्यक्रम में मनोविज्ञान विषय सम्मिलित करना चाहते थे जिससे समग्र जीवन दृष्टि विकसित हो सके।

अरविन्द बालक के बौद्धिक विकास के साथ उसका नैतिक एवं धार्मिक विकास भी करना चाहते थे। उनका मानना था कि मानसिक प्रवृत्ति नैतिक प्रवृत्ति पर आधारित है। बौद्धिक शिक्षा जो नैतिक व भावात्मक प्रगति से रहित हो मानव के लिए हानिकारक है! अनुशासन के द्वारा ही विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का निर्माण हो सकता है। अरविन्द के अनुसार शिक्षण एक विज्ञान है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन आना अनिवार्य है।

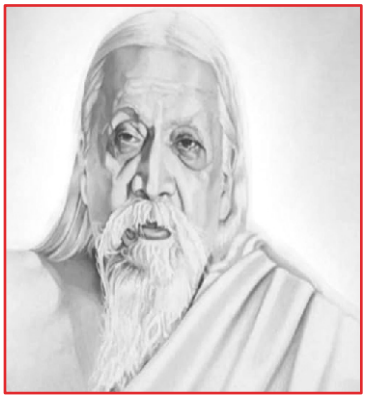

वास्तविक शिक्षण का प्रथम सिद्धान्त है कि कुछ भी पढ़ाना संभव नहीं है अर्थात बाहर से विद्यार्थी के मस्तिष्क पर कोई चीज न थोपी जाये। शिक्षण क्रिया को ठीक दिशा देनी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत अभिवृत्ति एवं योग्यता के अनुकूल शिक्षा देनी चाहिए। महर्षि अरविन्द मस्तिष्क को छठी ज्ञानेन्द्रिय मानते थे जिसके विकास पर वे अधिक बल देते थे। विकसित मानव में सूक्ष्म दृष्टि उत्पन्न होती है जिससे निष्पक्ष दृष्टिकोण विकसित होता है।

उनका संदेश था कि वास्तविक अनुशासन अपने अन्दर होता है स्वेच्छा से कर्तव्य पालन कराना ही अनुशासन है इनके अनुरूप प्रत्येक शिक्षक का दायित्व है कि अपने बच्चों के मन में ऐसा भाव भरे कि वे सच्चाई की ओर एकाग्रता से लगें। इसके अनुसार शिक्षक को बच्चों के साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। कठोरता से वास्तविक अनुशासन की प्राप्ति नहीं की जा सकती। 'दण्ड' को महर्षि अरविन्द अमानवीय कृत्य कहते थे।

महर्षि अरविन्द का शिक्षकों से आग्रह

1. शिक्षण करते समय बच्चों की शारीरिक और मानसिक क्षमता तथा उनकी अपनी रुचियों का

ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

2. रटने के स्थान पर समझने पर बल देना चाहिए।

3. बच्चों को क्रिया करने के अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए और उन्हें स्वयं के अनुभव से सीखने देना चाहिए।

4. बच्चों की चित्त वृत्तियों के निरोध चिंतन और समन क्रिया में प्रशिक्षित करते चलना चाहिए।

5. बच्चों के साथ प्रेम और सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने कार्य करने की स्वतंत्रता भी देनी चाहिए। हर स्तर पर बच्चों के सहयोग से आगे बढ़ना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षक नहीं है वह तो सहायक पथ प्रदर्शक है। वह केवल ज्ञान ही नहीं देता बल्कि वह ज्ञान प्राप्त करने की दिशा भी दिखलाता है। शिक्षण पद्धति की उत्कृष्टता उपयुक्त शिक्षक पर ही निर्भर है।

महर्षि अरविन्द के प्रेरक वचन

1. हर व्यक्ति में दिव्यता के कुछ अंश मौजूद होते हैं। उनमें कुछ विशेषता होती है। शिक्षा का यही कार्य है कि वह विशेषताओं को खोज निकाले।

2. कोई भी व्यक्ति दूसरे को सद्गुण धारण करना नहीं सिखा सकता है। दूसरे के गुण लेने या सीखने की जब भूख मन में जागती है, तो सद्गुण अपने आप सीख लिए जाते हैं।

3. यदि आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ सच्चा व्यवहार करें तो सबसे पहले आप खुद सच्चे बनें और सच्चा व्यवहार करें।

4 जीवन प्रदीप को आत्मा के प्रकाश में आलोकित करना होगा।

प्रेरक प्रसंग

"दो मुट्ठी चावल का सवाल है, मेरा कूँड़ा भर दे।" अयोध्या की गलियों में एक मलंग फकीर यह। आवाज लगाता हुआ सारा दिन चक्कर लगाता रहा, पर उसका कूँड़ा भरने वाला कोई न मिला। कोई मन्दिर, मठ, छावनी व गृहस्थ घर न बचा जहां वह न गया हो। सायं हताश फकीर बड़ी छावनी के सामने पहुंचकर पुनः आवाज लगायी, छावनी के महन्त संत रघुनाथ दास ने अपने परिचर से भिक्षा देने को कहा। परिचर के पहुंचने पर फकीर ने दो मुट्ठियों में कूँड़ा को भर देने की बात कहीं। अपने को अक्षम पाकर महन्त को बताया।

फकीर की शर्त सुनकर महन्त स्वयं आये और अपनी दो मुट्ठी चावल से कूँड़ा ही नहीं भरा बल्कि कूड़ा भरने के बाद चावलों का ढेर लगा दिया। स्तब्ध फकीर ने जब भोजन की इच्छा व्यक्त की। पर महन्त जी ने शर्त लगा दी–आपको भोजन, चावलों का ढेर कुंडे में भरने के बाद ही मिलेगा। फकीर मुस्कराया, बोला "कूंड़े भर जल्दी चावल'', भूख तेज लगी है। इतना कहते ही कूँड़े में सारे चावल समा गये। उसके पश्चात फकीर व संत दोनों ने साथ–साथ भोजन किया।

बालकोना

एक राजा ने सुंदर महल बनवाया और मुख्य द्वार पर गणित का एक सूत्र लिखवाया। राजा ने अपने राज्य में घोषणा कर दी कि इस सूत्र के हल होते ही ये द्वार खुल जाएगा और जो व्यक्ति ये सूत्र हल करके द्वार खोलेगा मैं उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करूँगा।

ये घोषणा जैसे ही लोगों को मालूम हुई तो सभी राजमहल के मुख्य तक पहुंच गए और गणित का सूत्र हल करने की कोशिश करने लगे। किसी को भी वह सूत्र समझ नहीं आ रहा था। जैसे–जैसे ये बात अन्य राज्यों तक पहुंची तो वहां से भी बड़े–बड़े गणितज्ञ ये सूत्र हल करने के लिए यहां पहुंच गए।

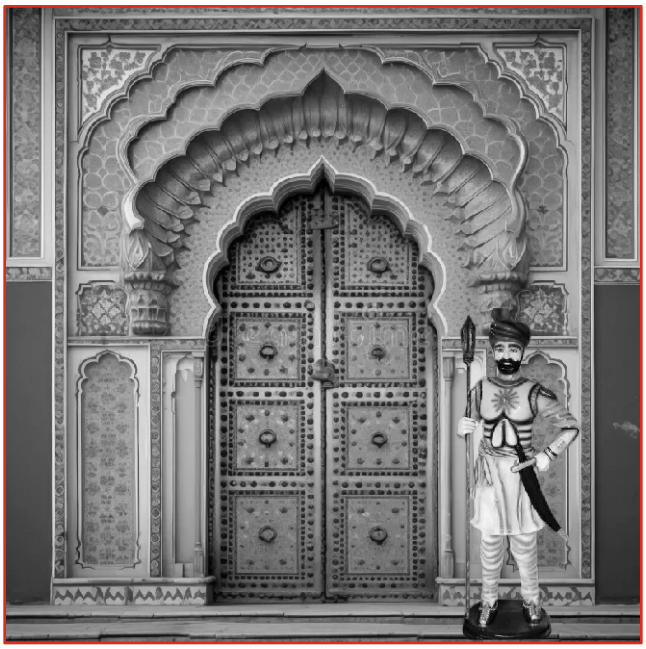

कुछ गणितज्ञ तो अपने साथ गणित की कई किताबें भी लेकर पहुंचे। बहुत कोशिशें की, लेकिन वे भी ये सूत्र हल नहीं कर सके। वहीं एक साधारण सा गरीब लड़का भी ये सब देख रहा था। उसने सोचा कि वह भी इस सूत्र को हल करने की कोशिश करेगा।

सैनिकों से उसने अपनी इच्छा बताई। सभी ने सोचा कि यहाँ बड़े–बड़े गणितज्ञ असफल हो गए हैं, तू भी कोशिश कर ले। यह लड़का कुछ देर ध्यान में बैठा और आँखे खोलकर दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। उसने दरवाजे को हाथ लगाया तो दरवाजा तुरंत ही खुल गया। ये देखकर सभी लोग हैरान हो गए।

राजा ने उस लड़के से पूछा कि तुमने ये कैसे कर दिया? लड़के ने बताया जब मैं ध्यान में बैठा तो मेरे अंतर्मन से आवाज आई कि पहले ये जाँच कर लेनी चाहिए कि ये सूत्र सही है भी या नहीं। इसके बाद इसे हल करने की सोचना। मैंने मन की बात मानी। सूत्र के साथ दरवाजे का संबंध जानने के लिए दरवाजा खोलने का प्रयास किया और ये दरवाजा खुल गया। इससे ये साबित हो गया कि सूत्र और दरवाजे में कोई संबंध नहीं था। वह कोई सूत्र था ही नहीं, उसे हल करने की जरूरत ही नहीं थी। ये तो छोटी सी समस्या थी, सभी ने अपने विचारों से इसे बहुत बड़ा और कठिन बना लिया था। राजा उसकी बुद्धिमान से प्रसन्न हो गया और उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया।

गतिविधियाँ

शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग

विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र द्वारा आयोजित शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग 5 जुलाई से 7 जुलाई 2024 तक सरस्वती कुंज, निराला नगर–लखनऊ में संपन्न हुआ। जिसमें 34 बहिनें अपेक्षित थीं, परन्तु 30 बहिनों की सहभागिता रही। वर्ग का उद्घाटन मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा० हेमचंद जी, सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ० राम मनोहर जी, क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख मा० विजय उपाध्याय जी के द्वारा उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ। मा० हेमचन्द्र जी ने 'शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग की आवश्यकता क्यों?' विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर भारतीय शिक्षा परिषद के सचिव एवं प्रशिक्षण प्रमुख मा० दिनेश जी, क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रमुख मा० उमाशंकर जी, सह क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रमुख माननीय कमलेश जी, क्षेत्रीय संपर्क प्रमुख मा० राजेंद्र बाबू जी इस प्रशिक्षण में उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग मा० दिनेश जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। प्रान्तशः आगामी प्रशिक्षण वर्ग हेतु कार्यशालायें चारों प्रान्तों में अलग–अलग दिवसांकों में सम्पन्न होंगी। इस प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग में गाँधी धाम गुजरात में प्रतिभाग करने वाली सभी बहिनें उपस्थित रहीं। वर्ग में 9 विषयों भाषा, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, गीत, कहानी, शारीरिक, कौशल विकास एवं योग की सभी विषय प्रमुखों द्वारा पाठ्य सामग्री के माध्यम से कक्षाएं चलायी गयीं। फिर सभी विषयों का सभी बहिनों के दो गट बनाकर अन्य बहिनों द्वारा प्रशिक्षण कराया गया। वर्ग का समापन मा० सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ राम मनोहर जी द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन बन्दे मातरम् के साथ हुआ।

बालिकाओं को सुरक्षा कानूनों के प्रति जागरूक कराया गया

दिनांक 06.07.2024. दिन शनिवार को सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज में "मिशन शक्ति" के अन्तर्गत कार्यक्रम आयोजित कर छात्राओं को विभिन्न सुरक्षा कानूनों एवं उनके लाभ प्राप्त करने के उपायों से अवगत कराया गया। उक्त कार्यक्रम में छात्राओं को महिला कल्याण से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना (PMMVY), मुख्यमंत्री बाल सेवा पेंशन एवं मिशन वात्सल्य योजना के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा, छेड़छाड़, दहेज प्रताड़ना, बाल उत्पीड़न शारीरिक एवं मानसिक आदि समस्याओं पर विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों जैसे 1098, 181, 112, 1930 आदि के बारे मे विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में रश्मि चतुर्वेदी सेन्टर मैनेजर, वन स्टॉप सेन्टर, विजेता गुप्ता– काउन्सल, वन स्टॉप सेन्टर, अन्जुम परवीन परियोजना समन्वयक, –चाइल्ड हेल्पलाइन, निशा मिश्रा, सुमन मौर्या काउन्सलर, चाइल्ड हेल्पलाइन, 'विभा सक्सेना– सुपरवाइजर, चाइल् – हेल्पलाइन, कय्यूम जरवानी काउन्सलर, जिला बाल संरक्षण इकाई, अखिल दीक्षित–सुपरवाइजर चाइल्ड हेल्पलाइन उपस्थित रहे–विद्यालय प्रधानाचार्य शिप्रा बाजपेई जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

दंत स्वास्थ्य सम्बन्धी कैम्प का आयोजन

स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन आज दिनांक 15 जुलाई 2024 दिन सोमवार को विद्यालय में दंत स्वास्थ्य सम्बन्धी कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में शहर के प्रतिष्ठित डा0 प्रदीप टंडन जी द्वारा छात्राओं को दांतों की बीमारी और देखभाल से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दी गई। छात्राओं द्वारा दांतों के रोगों से सम्बन्धित कई प्रश्न पूछे गये। जिनका उत्तर डा0 प्रदीप टंडन जी द्वारा विस्तार से दिया गया। साथ ही छात्राओं को टूथपेस्ट, व ब्रश की किट भी निःशुल्क प्रदान की गई।

विद्यालय के प्रबन्धक श्री चन्द्र भूषण साहनी जी, एवम् प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने डा0 प्रदीप टंडन जी के प्रति आभार व्यक्त किया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

संगीता सरस्वती शिशु मंदिर इंटरमीडिएट कॉलेज कछौना हरदोई में वृक्षारोपण कार्यक्रम मुख्य अतिथि आदरणीय एमएलसी श्री अशोक अग्रवाल जी द्वारा किया गया कार्यक्रम का आयोजन श्री राम शंकर शुक्ल प्रधानाचार्य जी द्वारा किया गया उक्त अवसर पर रेंजर श्री विनय कुमार सिंह जी कोटेदार शिरीष मिश्रा जी पूर्व सभासद धर्मेंद्र सिंह जी वरिष्ठ पत्रकार श्री मनोज तिवारी जी एवं श्री राम शंकर आजाद जी एवं श्री आशु सिंह जी बन दरोगा श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव जी सचिन जी इत्यादि उपस्थित रहे।

शक्ति मिशन प्रशिक्षण

आज दिनांक 09/07/2024 दिन मंगलवार को नगर मैगलगंज के विद्यालय सरस्वती शिशु / विद्या मन्दिर में कोतवाली मैगलगंज से महिला पुलिस की पूरी टीम आई तथा उन्होंने विद्यालय की कक्षा 3 से कक्षा 8 तक की सभी बहनों को शक्ति मिशन के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'मिशन शक्ति' एक योजना है जिसका उद्देश्य महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण को मजबूत करना है

उन्होंने Helpline Number महिलाओं, बालिकाओं को वीमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181 आपातकालीन सेवा 112 के बारे में विस्तार से बताया। इसके बाद उन्होंने बालिकाओं को good touch तथा bad touch के विषय में भी जानकारी दी। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान शैलेंद्र कुमार बाजपेयी जी, सुश्री दीप्ति जी व श्रीमती ज्योति जी उपस्थित रहीं।

10 दिवसीय क्षेत्रीय व्यक्तित्व विकास वर्ग का शुभारम्भ

अखिल भारतीय विद्या भारती पूर्वी क्षेत्र उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में सरस्वती कुंज निरालानगर, लखनऊ में शुक्रवार को 10 दिवसीय क्षेत्रीय व्यक्तित्व विकास वर्ग का शुभारंभ दिनांक 18 जुलाई 24 को हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय संगठन मंत्री विद्या भारती पूर्वी उत्तरप्रदेश हेमचंद उपस्थित रहे।

आये हुए मुख्य अतिथि के द्वारा माँ सरस्वती जी की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन हुआ। उसके उपरांत वंदना का कार्यक्रम हुआ। वंदना सत्र के उपरांत प्रथम सत्र में क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचन्द द्वारा विद्या भारती का परिचय व हमारा लक्ष्य पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। प्रथम और तृतीय सत्र को क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचंद्र द्वितीय सत्र को कमलेश, चतुर्थ सत्र को दिनेश के द्वारा लिया गया। पूर्वी क्षेत्र में चलने वाले विद्या भारती पूर्वी प्रदेश क्षेत्र के व्यक्तित्व विकास वर्ग में सरस्वती

शिशु, विद्या मंदिरों से वरिष्ठ आचार्य/प्रथम सहायकों को रहना था। वर्ग 18 जुलाई से 28 जुलाई तक चलेगा। जिसमे प्रतिदिन की संकल्पना व विद्यालय संचालन आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त होगा। प्रमुख कमलेश सिंह, बालिका शिक्षा के क्षेत्रीय प्रभारी उमाशंकर मिश्र, 6 सत्र होंगे। इन सत्रों में प्रशिक्षणार्थियों को विद्या भारती इस मौके पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रमुख दिनेश सिंह, सह संभाग निरीक्षक विजयशंकर, प्रशिक्षण करने वालों में मुख्य रूप से शिवम तिवारी, सचिन अवस्थी, अभयराज, रश्मि, शशि, अमर, चंद्रेश आदि लोग मौजूद रहे।

आचार्य केवल आचार्य नही, वह भारत के भविष्य भैया बहनों का पथ प्रदर्शक है।

अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री

सरस्वती कुंज निरालानगर लखनऊ में शनिवार को अखिल भारतीय विद्या भारती पूर्वी क्षेत्र उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में 10 दिवसीय क्षेत्रीय व्यक्तित्व विकास वर्ग के द्वितीय दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र उपस्थित रहे। आये हुए मुख्य अतिथि के द्वारा माँ सरस्वती जी की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन हुआ। उसके उपरांत वंदना का कार्यक्रम हुआ। वंदना सत्र के उपरांत प्रथम सत्र में अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र ने श्रेष्ठ आचार्य की संकल्पना पर विषय रखते हुए कहा कि आचार्य केवल आचार्य नही है वह भारत के भविष्य भैया बहनों का पथ प्रदर्शक है। आचार्य को स्वाध्याय, करना चाहिए व श्रम निष्ठा, संवेदनशीलता, होनी चाहिए। उसको सत्य, करुणा, शुचिता, धर्म का अनुसरण करना चाहिए। समाज के सम्पर्क में रहकर समन्वय बनाते हुए संवाद करना चाहिए। अगले सत्र में जन शिक्षा समिति अवध के प्रदेश निरीक्षक मिथिलेश अवस्थी ने Class room process पर अपना मार्ग दर्शन प्रदान किया। उन्होंने बताया हमे NEP 2020 के अनुसार शिक्षण करना चाहिए। आचार्य सुविधादाता, परामर्शदाता होना चाहिए।

उसके बाद शेषधर द्विवेदी ने अभिभावक संपर्क, सम्मेलन, गोष्ठी, मातृ भारती पर चर्चा की। इस अवसर पर मुख्य रूप से दिनेश, कमलेश, उमाशंकर, विजयशंकर, शिवम तिवारी, विजय बहादुर, अमर, शिवसागर, प्रदीप, रणजीत, समीर, आदि लोग मौजूद रहे।

प्रश्न पत्र निर्माण कार्यशाला

प्राथमिक कक्षाओं की सरस्वती शिशु मन्दिर फतेहगढ़, फर्रूखाबाद। उच्च प्राथमिक कक्षाओं की रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन राजापुर प्रयागराज एवं माध्यमिक कक्षाओं के यू. पी. बोर्ड सरस्वती विद्या मन्दिर शुक्लागंज उन्नाव में सम्पन्न हुई। माध्यमिक कक्षाओं सी.बी.एस.ई के विद्यालय की कार्यशाला सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माल्देपुर, बलिया में पूर्ण हुई। विद्या भारती के अधिकारियों के मार्ग दर्शन में कार्यशालाएं सम्पन्न करायी गई।

हमारे विविध कार्यक्रम

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ। प्रेषण तिथि– 5,6,7,8

हमारे विविध कार्यक्रम

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01.08.2024